मान मन्दिर बरसाना

मासिक पात्रिका, नवम्बर २०२३, वर्ष ७, अंक ११

मूल्य १०/-

૦૨

+

विषय- सूचिका

प्रसंग		पृष्ठांक
१	विश्वमंगलकारिणी परम रसमयी 'श्रीराधारानी ब्रजयात्रा'	०५
२	ब्रजयात्रा के अद्भुत चमत्कार	१०
३	श्रीराधा-शक्ति का स्वरूप 'संकीर्तानाराधन'	१४
४	अद्भुत महिमाशालिनी 'राधाराधना'	१७
५.	निष्किञ्चन ब्रजयात्रियों की भावना-शक्ति का अद्भुत चमत्कार	२०
६ .	श्रीब्रजाराध्या राधिका	२२
७ .	परमाराध्य 'ब्रज का विशुद्ध प्रेम'	२६
८.	असीम करुणामय 'अवतरित धाम'	२८
९ .	इष्ट-प्रेम की पहिचान 'श्रीधाम में प्रगाढ़ प्रीति'	३१
१०.	सतत् साधन से धामवास की सार्थकता	३३

|| राधे किशोरी दया करो ||
हमसे दीन न कोई जग में,
बान दया की तनक ढरो ।
सदा ढरी दीनन पै श्यामा,
यह विश्वास जो मनहि खरो ।
विषम विषयविष ज्वालमाल में,
विविध ताप तापनि जु जरो ।
दीनन हित अवतरी जगत में,
दीनपालिनी हिय विचरो ।
दास तुम्हारो आस और की,
हरो विमुख गति को झगरो ।
कबहूँ तो करुणा करोगी श्यामा,
यही आस ते द्वार पर्‌यो । –

पूज्य श्रीबाबामहाराज कृत नित्य स्तुति-पद

संरक्षक- **श्रीराधामानबिहारीलाल**
प्रकाशक – **राधाकान्त शास्त्री, मानमंदिर सेवा संस्थान,**
गह्वरवन, बरसाना, मथुरा (उ.प्र.)
mob. **राधाकांत शास्त्री** 9927338666
(Website :www.maanmandir.org)
(E-mail :info@maanmandir.org)

श्रीमानमंदिर की वेबसाइट www.maanmandir.org के द्वारा आप प्रातःकालीन सत्संग का ७:३० से ८:३० बजे तक तथा संध्याकालीन संगीतमयी आराधना का सायं ६:३० से ८:०० बजे तक प्रतिदिन लाइव प्रसारण देख सकते हैं ।

परम पूज्यश्री रमेश बाबा महाराज जी द्वारा सम्पूर्ण भारत को आह्वान –
"मजदूर से राष्ट्रपति और झोंपड़ी से महल तक रहने वाला प्रत्येक भारतवासी विश्वकल्याण के लिए गौ-सेवा-यज्ञ में भाग ले ।"

*** योजना ***

अपनी आय से १ रुपया प्रति व्यक्ति प्रतिदिन निकालें व मासिक, त्रैमासिक, अर्धवार्षिक अथवा वार्षिक रूप से इकट्ठा किया हुआ सेवाद्रव्य किसी विश्वसनीय गौसेवा प्रकल्प को दान कर गौरक्षा कार्य में सहभागी बन अनन्त पुण्य का लाभ लें । हिन्दूशास्त्रों में अंशमात्र गौसेवा की भी बड़ी महिमा का वर्णन किया गया है ।

विशेष:- इस पत्रिका को स्वयं पढ़ने के बाद अधिकाधिक लोगों को पढ़ावें जिससे आप पुण्यभाक् बनें और भगवद्-कृपा के पात्र बनें । हमारे शास्त्रों में भी कहा गया है –

सर्वे वेदाश्च यज्ञाश्च तपो दानानि चानघ । जीवाभयप्रदानस्य न कुर्वीरन् कलामपि || (श्रीमद्भागवत ३/७/४१)

अर्थ:- भगवत्तत्त्वके उपदेश द्वारा जीव को जन्म-मृत्यु से छुडाकर उसे अभय कर देने में जो पुण्य होता है, समस्त वेदों के अध्ययन, यज्ञ, तपस्या और दानादि से होनेवाला पुण्य उस पुण्य के सोलहवें अंश के बराबर भी नहीं हो सकता ।

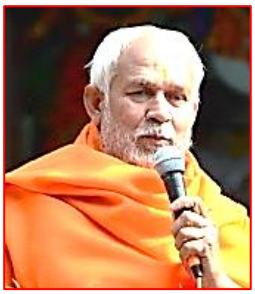

प्रकाशकीय

धाम में विशेषता है कि वह प्रभु के पास पहुँचा देता है । वैकुण्ठ तो हमारे लिए अलभ्य है, वह प्रभु से क्या मिलाएगा ? धाम में पापी, दुष्ट, दुरात्मा सब आते हैं; सबको प्रवेश है और सभी लाभान्वित होते हैं । भगवान् के अवतार का कारण है – करुणा, अनन्त जीवों के क्लेश को देखकर वे यहाँ आते हैं और उनकी लीला को गाकर सभी भवसागर पार कर लेते हैं । अनादिकाल से अनन्त जीव दुःखी हैं, प्रभु की करुणाशक्ति-कृपाशक्ति उन्हें यहाँ लाती है । दुःखी प्राणी धाम में उन प्रभु की करुणा-शक्ति का लाभ लेते हैं । अस्वस्थ्य व्यक्ति 'औषधालय' पहुँचता है, उसी तरह सभी का सहारा 'धाम' है, 'धाम' सबका तारक है । जो अपराध कभी नष्ट नहीं होता हो, वह भी धाम की कृपा से नष्ट हो जाएगा । उदाहरण है सीताजी की निन्दा करने के पश्चात् भी धाम ने उस निन्दक को शोकरहित बना दिया । ब्रज में इन्द्र को देखो, जिसने ऐसा भयानक कार्य किया कि ब्रज का नाम-निशान भी न रहे, प्रलय के बादलों ने पूरी शक्ति से ब्रज को मिटाने का प्रयत्न किया । ब्रह्माजी ने भी अपराध किया परन्तु उन्होंने मात्र श्रीकृष्ण और ग्वाल बाल तथा गाय बछड़ों का हरण कर लिया, उस दृष्टि से ब्रह्माजी का अपराध बहुत छोटा था । उससे किसी को कोई कष्ट नहीं हुआ था परन्तु इन्द्र ने तो प्रलय मचा दिया, ब्रजवासी भयाक्रान्त हो गये, कृष्ण के पास भागे । सबने कहा – 'हे कृष्ण ! इस ब्रज के तो आप ही नाथ हैं । इस देवराज के कोप से हमें बचाओ, अन्यथा सब कुछ मिट जायेगा ।' प्रभु ने गिरिराजजी को धारण किया और बोले – 'अब भय मत करो ।' अन्त में इन्द्र 'कृष्ण' की शरण में आया, उन्होंने उसे उपदेश दिया कि स्तम्भ रहित होकर कार्य करो । छोटा बनना ही भक्ति है । भगवान् ने इन्द्र का अपराध क्षमा कर दिया । अधिकार इसलिए नहीं मिलता है कि जीव असुर बन जाए । गिरिराजलीला का सार यही है कि अधिकार का दुरुपयोग नहीं किया जाए । इतने बड़े अपराध को प्रभु ने सहज में क्षमा कर दिया, जबकि इन्द्र सर्वनाश करने आया था; ऐसा क्यों ? ब्रह्माजी ने इतना बड़ा अपराध भी नहीं किया था और उन्होंने स्तुति भी बहुत बड़ी की थी । इन्द्र ने जो कुछ किया था, उसके कारण समस्त ब्रजवासी एकत्रित हुए, जिन्होंने सात दिन-रात अनवरत् कृष्ण-दर्शन किया; यही पुण्य बन गया । ब्रह्माजी ने ग्वालबाल-बछड़ों को कृष्ण से अलग कर दिया था । ब्रह्माजी उस पाप से मुक्त हुए धाम-सेवा से, उन्होंने ब्रज की तीन परिक्रमा की – **ब्रज परिकरिमा करहु, देह को पाप नसावहु ।**

श्रीमुख विधि सों कह्यो, देर अब नेक न लावहु ॥

धाम में राजस-तामस रहनी से न रहे और जिनकी राजस-तामस रहनी है, उनमें अभाव न करे । धाम में कष्ट या दुःख मिलता है, उसमें प्रसन्न होना चाहिए; यही धाम के प्रति राग है । दुःख को सुख समझो, अपयश को यश समझो क्योंकि सभी परिस्थितियाँ प्रभु की इच्छा से ही आती हैं । ब्रजगोपीजनों ने कभी कष्ट को कष्ट नहीं समझा ।

प्रबन्धक

राधाकान्त शास्त्री

श्रीमानमंदिर सेवा संस्थान ट्रस्ट

विश्वमंगलकारिणी परम रसमयी 'श्रीराधारानी ब्रजयात्रा'

गर्ग संहिता के अनुसार जब द्वापरान्त में पृथ्वी सहित देवगण गोलोक धाम में भगवान् श्रीकृष्ण से भू-भार हरण हेतु अवतार के लिए प्रार्थना करने गए तो श्याम सुन्दर ने राधारानी की ओर देखकर कहा- हे देवी ! मैं पृथ्वी पर अवतार लूँगा किन्तु आपके बिना मेरी लीला अधूरी रहेगी अतः कृपा करके आप भी मेरे साथ पृथ्वी पर अवतार लीजिये । राधारानी ने स्पष्ट कह दिया –

यत्र वृन्दावनं नास्ति यत्र नो यमुना नदी ।
यत्र गोवर्द्धनो नास्ति तत्र मे न मनः सुखम् ॥

(गर्गसंहिता, गोलोकखण्ड - ३/३२)

जहाँ वृन्दावन नहीं है, गोवर्धन पर्वत नहीं है तथा यमुना नदी नहीं है, वहां मेरे मन को सुख नहीं मिलता । इनके बिना मैं नहीं रह सकूँगी ।

तब श्रीजी की कृपा और श्री कृष्ण की प्रेरणा से समस्त ब्रजभूमि का गोलोक धाम से पृथ्वी पर अवतरण हुआ ।

वेदनागक्कोशभूमिं स्वधाम्नःश्रीहरिःस्वयम् ।
गोवर्धनं च यमुनां प्रेषयामास भूपरि ॥

(गर्गसंहिता, गोलोकखण्ड - ३/३३)

यह ब्रजधाम पृथ्वी पर दृष्टिगोचर होते हुए भी पृथ्वी से और विश्व ब्रह्माण्ड से परे, त्रिगुणातीत दिव्य चिन्मय है । भगवान् ने ब्रज को इस पृथ्वी पर इसीलिए स्थापित किया है ताकि इसके आश्रय के द्वारा हम सहजता से भगवत्प्रेम, भगवत्प्राप्ति और नित्य धाम की प्राप्ति कर सकें । ब्रजपरिक्रमा के द्वारा भक्तापराध जैसा भयंकरतम अपराध भी नष्ट होता है जिसे स्वयं भगवान् भी क्षमा नहीं करते हैं । इसीलिए जब ब्रह्मा जी ने मोहवश श्री श्यामसुंदर के सखा गोप बालकों तथा उनके बछड़ों का हरण कर लिया तो उनको भक्तापराध लग गया । इस अपराध के परिमार्जन हेतु उन्होंने तीन बार ब्रज परिक्रमा की तब उनका भक्तापराध नष्ट हुआ ।

इत्यभिष्टूय भूमानं त्रिः परिक्रम्य पादयोः ।
नत्वाभीष्टं जगद्धाता स्वधाम प्रत्यपद्यत ॥

(श्रीमद्भागवत १०/१४/४१)

ब्रज परिक्रमा करहु देह को पाप नसावहु ।

ब्रजयात्रा क्यों की जाती है, ब्रजयात्रा का क्या उद्देश्य होता है और क्या होना चाहिए ? ब्रह्मा जी ने भी ब्रजयात्रा की थी, श्री विदुर जी ने भी ब्रज यात्रा की, नागा जी महाराज तो एक दिन में ही सम्पूर्ण ब्रज मण्डल की परिक्रमा कर लिया करते थे । शरीर का प्रत्येक अंग, प्रत्येक अवयव भगवान् के लिए ही कर्म करे, हमारा प्रत्येक कर्म, प्रत्येक क्रिया भगवदार्पित हो । हम लोग कहते हैं कि हम भगवान् की शरण में हैं, भगवान् की शरणागति ग्रहण करनी चाहिए । श्रीमद्गीता जी का जो अंतिम उपदेश है और जो गीता जी का सार है, उसमें भी भगवान् ने यही कहा कि- **मामेकं शरणं ब्रज**...एक मात्र मेरी शरण में आ । शरणागति अन्यत्र नहीं लेनी चाहिए क्योंकि सच्ची शरण एकमात्र भगवान् के प्रति है । **मामेकं शरणं** भगवान् ने कोई दूसरी शरण के बारे में नहीं कहा, उन्होंने कहा कि एकमात्र मेरी ही शरण में आया जाये । ब्रजयात्रा भगवान् की शरणागति ग्रहण करने की एक विधि है ।

श्री भट्ट देवाचार्य जी महाराज ने कहा है-

धनि धनि चरण चलत तीरथ को,
धनि गुरु जिन हरि नाम सुनायो ।
मदन गोपाल शरण तेरी आयो । वे चरण धन्य हो जाते हैं, शरीर से किया हुआ प्रत्येक कर्म धन्य हो जाता है, वह शरीर धन्य हो जाता है, वह जीवन धन्य हो जाता है, वह जन्म धन्य हो जाता है जो भगवान् के काम आ जाए क्योंकि ये श्रीमद्भागवत में लिखा है-

"पादौ हरेः क्षेत्रपदानुसर्पणे"

(श्रीमद्भागवत ९/४/२०)

चरणों से यदि भगवद्धाम की यात्रा नहीं की गयी तो ये चरण केवल जड़ की तरह हैं जैसे पेड़ अचर जीव हैं, चल फिर नहीं सकते, जहाँ खड़े हैं वहां खड़े ही रहेगें, इन्हें धूप-ताप-शीत आदि बहुत से द्वन्द सहने पड़ते हैं, कष्ट सहने पड़ते हैं । ये न तो अपना कष्ट दूर कर सकते हैं और न ही किसी से कह सकते हैं, न कष्ट दूर करने का प्रयास कर सकते हैं । जड़ आदि योनियों से मुक्ति प्राप्त करने के लिए ही धाम की परिक्रमा की जाती है ।

ब्रजयात्रा से लौकिक लाभ और पारमार्थिक लाभ- दोनों प्रकार के लाभ होते हैं । ब्रजयात्रा करने से लौकिक लाभ तो यह होता है कि हम जड़ योनियों की प्राप्ति से दूर रहते हैं, हमारे पाप नष्ट होते हैं । ऐसे-ऐसे जघन्य पाप ब्रज परिक्रमा से नष्ट होते हैं, जिनकी हमलोग कल्पना भी नहीं कर सकते और पारमार्थिक लाभ यह है कि ब्रज यात्रा के माध्यम से हमलोगों को संत सानिध्य मिलता है, धाम वास मिलता है, सतत हरिनाम संकीर्तन श्रवण करने को मिलता है । ब्रजयात्रा करने से सबसे बड़ा लाभ यही है कि हमारा चित्त, हमारा अंतःकरण बिना प्रयास के स्वतः ही भगवान् में लगा रहता है, हम न चाहें, हम प्रयास न करें तो भी ब्रज यात्रा के द्वारा हमारा चित्त भगवान् में लगा रहेगा । ऐसा संयोग मान मंदिर से संचालित राधा रानी ब्रज यात्रा में ही बनता है । इस यात्रा में चौबीस घंटे अखण्ड कीर्तन चलता रहता है इसलिए न चाहने पर भी कान में सतत हरिनाम प्रवेश करता रहता है । इस तरह से स्वमेव ही भगवत शरणागति सुगमता पूर्वक हो जाती है । इसलिए ब्रज परिक्रमा इस उद्देश्य से करनी चाहिए कि हम भगवान् की शरण ग्रहण करें । ब्रजयात्रा करते समय आपस में भक्तों के प्रति कटु वाणी, राग-द्वेष आदि द्वंदों का परित्याग कर देना चाहिए तब हमें ब्रज परिक्रमा का यथार्थ फल मिलेगा ।

ब्रजनिष्ठ परम श्रद्धेय पूज्य श्रीरमेशबाबामहाराज द्वारा संचालित श्री राधारानी ब्रजयात्रा अपने में अलौकिक है,ब्रज में ब्रज यात्राओं का व्यापारीकरण होने लग गया,शुल्क लेकर पदयात्रा नहीं अपितु वाहनों द्वारा यात्रा करायी जाने लगीं और शुल्क भी इतना अधिक लिया जाता है कि गरीब व्यक्ति ब्रज यात्रा नहीं कर सकते । ब्रज यात्राओं में धन का इतना वर्चस्व देखकर पूज्य श्री बाबा महाराज को बहुत दुःख हुआ कि गरीब व्यक्ति तो धनाभाव में ब्रजयात्रा, ब्रज का दर्शन ही नहीं कर सकते । इस समस्या को देखकर बाबा महाराज ने संकल्प कर लिया कि अब मान मंदिर द्वारा एक ऐसी यात्रा का शुभारम्भ होगा जो पूर्णतया निःशुल्क होगी,जिसमे गरीब श्रद्धालु बिना किसी रोकटोक के सहजता से ब्रज परिक्रमा कर ब्रजभूमि का दर्शन कर सकेंगे । श्री बाबा के संकल्प को पूर्ण होने में देर नहीं लगी और सन् १९८८ से उनके नेतृत्त्व में ब्रजयात्रा का शुभारम्भ हो गया । श्री बाबा महाराज ने इस यात्रा का नामकरण किया –'श्री राधारानी ब्रजयात्रा'। श्री बाबा ने कहा कि यह राधारानी की यात्रा है और वे ही इसका सञ्चालन करती हैं । यात्रा के लिए जो पर्चे मुद्रित किए गए थे,श्री बाबा महाराज ने मान मंदिर के प्रबंधकों से स्पष्ट कह दिया कि इन पर्चों में केवल श्री राधामानबिहारीलाल का ही नाम देना,यदि मेरा नाम डाला गया तो मैं यात्रा में नहीं जाऊंगा । बाबा महाराज के निर्देशानुसार यात्रा का सञ्चालन किया गया किन्तु उस समय मान मंदिर पर अर्थ का पूर्णतया अभाव था, यात्रा उठाना अत्यंत दुरूह कार्य था , उस समय मान मंदिर पर रहने वाले बाबा के प्रति पूर्ण समर्पित ब्रजवासी श्री रघुवीर भगत जी अपना खेत गिरवी रखकर ११ हजार रूपए ऋण लाये और उसी धन से यात्रा का शुभारम्भ हुआ । मान मंदिर की आर्थिक स्थिति उस समय इतनी शोचनीय थी कि न तो यात्रा के लिए तम्बू – तनात की व्यवस्था थी,न भोजन का प्रबंध था, केवल ११ मन सत्तू पिसाकर सत्तू का ही आहार यात्रियों को उपलब्ध कराकर यात्रा की गयी । बिजली – पानी आदि किसी प्रकार की कोई सुविधा नहीं थी,ग्रीष्म ऋतु में लू के भीषण झकोरों को सहते हुए प्रारम्भिक यात्रायें की गयीं । जब बरसाना से प्रथम बार श्री बाबा महाराज के नेतृत्त्व में २०० लोगों के साथ यात्रा रवाना हुई तो कुछ लोगों ने श्री बाबा महाराज का बहुत विरोध किया कि इन्हें यात्रा संचालन करने का कोई अधिकार नहीं है किन्तु श्री बाबा महाराज ने किसी विरोध,किसी कठिनाई की कोई परवाह नहीं की और प्रेम दीवानी मीराजी की तरह अति निरंकुश और निडर होकर ब्रज यात्रा का नेतृत्त्व किया । समस्त असुविधाओं से युक्त होने पर भी श्री राधारानी ब्रजयात्रा में महाराज श्री द्वारा अखण्ड नाम संकीर्तन की व्यवस्था की गयी थी । प्रारम्भ में यह तीन वर्षों में एक बार ही उठाई जाती थी परन्तु इसकी लोकप्रियता इतनी बढ़ती गयी कि श्रद्धालु भक्तों के प्रबल आग्रह पर १९९६ से यह यात्रा प्रतिवर्ष उठाई जाने लगी है । राजस्थान के एक वयोवृद्ध प्रसिद्ध संत यात्रियों के लिए भोजन व्यवस्था का कई वर्षों तक प्रबंध करते रहे परन्तु यात्रा में भक्तों की प्रतिवर्ष बढ़ती संख्या देखकर एक बार उन्हाने श्री बाबा महाराज से प्रार्थना किया कि राधारानी

ब्रज यात्रा में लोगों की संख्या प्रतिवर्ष वृद्धि को प्राप्त हो रही है और इसी प्रकार देश में महंगाई भी तेजी से बढ़ रही है,ऐसी स्थिति में आप कम से कम प्रत्येक ब्रज यात्री के लिए १०० रुपये का शुल्क रख दीजिये अन्यथा भविष्य में यात्रा का निर्वाह करना असंभव हो जायेगा । उनकी बात सुनकर श्री बाबा ने उत्तर दिया कि यह श्री राधारानी की ब्रजयात्रा है, इसका निर्वाह,पोषण और परिसंचालन वह स्वयं करती हैं, उनके रहते भला हम क्यों इसके निर्वाह की चिंता करें । वह संत श्रीबाबा के उत्तर को सुनकर बोले – महाराज ! ऐसी स्थिति में मेरे लिए भविष्य में यात्रा हेतु भोजन व्यवस्था का प्रबंध करना असम्भव होगा । श्रीबाबामहाराज ने उनसे कहा कि आप चिंता मत करें, भोजन व्यवस्था का उत्तरदायित्त्व आप छोड़ दीजिये । यात्रियों से शुल्क लेने के स्थान पर मैं यात्रा को बन्द करना अधिक श्रेष्ठ समझूँगा किन्तु यात्रियों से पैसा लेना मैं अपराध समझता हूँ । श्रीबाबामहाराज के परामर्श से उन संतजी ने भोजन-व्यवस्था का प्रबन्ध छोड़ दिया और यात्रियों की संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती गयी फिर भी यात्रा में किसी प्रकार की असुविधा नहीं हुई और अब तो १५ से २० हजार यात्री तक आनन्द से प्रतिवर्ष निःशुल्क यात्रा का लाभ उठाते हैं । समस्त असुविधाओं से प्रारम्भ हुई यह ब्रजयात्रा अब सर्वसुविधासम्पन्न और परम रसमयी बन गयी है । यात्रियों को दोनों समय भोजन उपलब्ध कराया जाता है,प्रातःकाल अल्पाहार प्रदान किया जाता है । इसके अतिरिक्त बीमार पड़ जाने पर यात्रियों की चिकित्सा हेतु डॉक्टरों का प्रबंध किया जाता है जो निःशुल्क रूप से रोगियों को औषधि वितरण करते हैं । प्रातःकाल ५ से ६ बजे के मध्य ब्रजयात्रा अपने पड़ाव स्थल से अगले पड़ाव को चल देती है । ब्रजयात्रियों को अपना सामान स्वयं नहीं वहन करना पड़ता है,इसके लिए बड़े–बड़े वाहनों की व्यवस्था की जाती है । यात्री गण सुबह परिक्रमा में चलते समय अपना सामान पड़ाव स्थल पर ही छोड़ जाते हैं, फिर वाहन उनके सामान को अगले पड़ाव पर पहुँचा देते हैं । यह व्यवस्था भी पूर्णरुपेण निःशुल्क है । राधारानी ब्रजयात्रा का सबसे महत्वपूर्ण आकर्षण होता है चौबीस घंटे का अखण्ड कीर्तन, इसके कारण चालीस दिवसीय यात्रा का प्रत्येक क्षण, रस और प्रेम की अनुभूति कराता रहता है । प्रातःकाल जब यात्रा अपने गन्तव्य को रवाना होती है तो उसकी भी एक समुचित व्यवस्था होती है । यात्रा की विशाल पंक्ति में सबसे आगे एक संत श्री जी की झंडी लेकर चलते हैं, उनके पीछे मान मंदिर द्वारा संचालित 'दीदीजी गुरुकुल' के बालक और बालिकाएँ चलते हैं, उनके पीछे साधु-संत चलते हैं, उनके पीछे श्रीराधामानबिहारीलाल को एक डोले में विराजित कर एक संत चलते हैं, उनके पीछे मानमंदिर की साध्वियों व संतजनों की कीर्तन-मंडली होती है, जो सुमधुर स्वर में परिक्रमा के सम्पूर्ण मार्ग पर कीर्तन करते हुए चलती है, कीर्तन मण्डली के पश्चात १५ से २० हजार यात्रियों की विशाल कतार होती है जो पूर्ण अनुशासितरूप से संकीर्तन करते हुए नृत्य-गान करते हुए चलती है । मानबिहारीलालजी के डोले के आगे मानमंदिर की दिव्य साध्वियां सारे रास्ते नृत्याराधन करती हुई चलती हैं । इस रसमय गान और नृत्य से यात्रा का वातावरण अत्यधिक सरस हो जाता है । यात्रा की अग्रिम पंक्ति में माइकों द्वारा जो रसमय कीर्तन होता है वह दूर तक सभी यात्रियों को सुनाई पड़े इसके लिए वायरलेस ध्वनि यंत्रों की व्यवस्था की जाती है । इसके लिए दस-बारह युवकों का प्रबंध किया जाता है जो अपने कंधो पर लाउड स्पीकर और मशीन लेकर चलते हैं, इन यंत्रों में ऐसी व्यवस्था होती है कि यात्रा की अग्रिम पंक्ति में जो कीर्तन होता है, बिना तार के ही उसकी ध्वनि २-३ किलोमीटर तक प्रसारित होती रहती है और उसके माध्यम से दूर तक फैले हुए पंद्रह-बीस हजार यात्री संकीर्तन का रसमय श्रवण करते हुए आनंद से झूमते हुए चलते हैं । मार्ग में जो भी लीला स्थलियाँ पड़ती है, यात्रा के व्यवस्थापक संतजन यात्रियों को उनका दर्शन कराते एवं उनकी महिमा का वर्णन करते हैं । राधारानी ब्रजयात्रा से ब्रजवासियों का अगाध स्नेह है, परिक्रमा के दौरान जो भी गाँव आते हैं, वहाँ के ब्रजवासी अत्यन्त प्रेम और उत्साह के साथ यात्रियों का स्वागत करते हैं । यात्रियों को फूलों की माला पहनाते हैं और उन्हें अनेक भोज्य पदार्थ बनाकर खिलाते हैं । प्रत्येक गाँव के ब्रजवासी प्रतिवर्ष अत्यधिक बेसब्री के साथ राधा रानी ब्रजयात्रा की प्रतीक्षा करते हैं और यात्रा के आगमन पर अनेकों गाँवों में

सम्पूर्ण मार्ग पर फूलों की वर्षा करके, आरती उतारकर और कीर्तन मण्डलियों के सहित अनेकों व्यंजनों के साथ ऐसा स्वागत होता है कि सभी का मन प्रेम से गदगद हो जाता है । ब्रज में अन्य संस्थाओं और सम्प्रदायों के द्वारा भी ब्रजयात्राओं का संचालन होता है परन्तु उनकी यात्राओं के प्रति ब्रजवासियों का वह अगाध प्रेम देखने को नहीं मिलता जैसा कि राधा रानी ब्रजयात्रा के प्रति ब्रजवासियों का अभूतपूर्व प्रेम दृष्टिगोचर होता है । यात्रा जब अपने गन्तव्य को पहुँचती है तो वहां पहले से ही यात्रियों के आवास हेतु दूर-दूर तक फैले विशाल तम्बू-तनातों की व्यवस्था की जाती है । कई टैंकरों के द्वारा यात्रियों के लिए जल और स्नान सुविधा का प्रबन्ध रहता है । जेनरटर के द्वारा विद्युत व्यवस्था का भी प्रबंध रहता है । यात्रा के पड़ाव स्थल पर भी अनवरत रसमय संकीर्तन नृत्य की अनुपम छटा बिखरी रहती है । जिन लीला स्थलियों से यात्री गुजर कर आते हैं और जहाँ पर उनका पड़ाव स्थल होता है, सायंकालीन सत्संग में श्रीबाबामहाराज शास्त्रीय प्रमाण के द्वारा विस्तार से वहाँ की कथा सुनाते हैं । श्रीबाबा का दर्शन एवं उनके सत्संग का लाभ उठाने के लिए स्थानीय पड़ाव स्थल के ब्रजवासी भी बड़ी संख्या में आते हैं और अपनी संकीर्तन मण्डली के साथ देर रात तक कीर्तन और नृत्य करते हैं । सन् २०११ की यात्रा से श्री बाबा महाराज की अस्वस्थता के कारण वे सायंकाल वाहन से प्रतिदिन यात्रियों को लीला स्थलियों का बोध कराने हेतु आते हैं । इसके पूर्व की सम्पूर्ण यात्राओं में श्री बाबा महाराज स्वयं पूरी यात्रा में ब्रजयात्रियों के साथ रहते थे । जब वह यात्रा में चलते थे तो मार्ग में जो भी गाँव पड़ते थे वहां के ब्रजवासियों को अत्यधिक उत्साह के साथ प्रतिदिन संकीर्तन प्रभातफेरी में जाने को कहा करते थे । श्री बाबा महाराज के उपदेश का ग्रामीण ब्रजवासियों पर ऐसा प्रभाव पड़ता था कि अगले दिन से ही विशाल संख्या में कीर्तन करते हुए वे प्रभात फेरी आरम्भ कर देते थे । ब्रजयात्रा के माध्यम से श्री बाबा महाराज ने सम्पूर्ण ब्रजमंडल के हजारों गाँवों में संकीर्तन प्रभात फेरियों को प्रारंभ करा दिया, प्रभात फेरियों को अधिक सुचारू रूप से चलाने हेतु उनकी प्रेरणा से हजारों गाँवों में निःशुल्क माइक और ढोलकों का भी वितरण किया गया ।

राधारानी ब्रजयात्रा का उद्देश्य केवल ब्रज की परिक्रमा और ब्रज दर्शन ही नहीं है अपितु इसका मूल उद्देश्य तो ब्रजभूमि में भगवन्नाम संकीर्तन का प्रचार करना,ब्रज के नष्ट हो रहे तीर्थस्थलों का जीर्णोद्धार,उनका पुनः प्राकट्य तथा इनके माध्यम से ब्रज की लुप्त हो रही संस्कृति का संरक्षण करना है । इस यात्रा के माध्यम से इस उद्देश्य की पूर्ति में बहुत अधिक सफलता मिली है । ब्रज में अनेकों कुण्डों का जीर्णोद्धार किया गया,नवीन लीला स्थलियों की खोज हुई,वनों का संरक्षण किया गया तथा ब्रज वसुन्धरा के दिव्य पर्वतों को खनन माफियाओं के चंगुल से मुक्त कराकर उनकी सुरक्षा की गयी ।

राधारानी ब्रजयात्रा में सतत् संकीर्तन का दिव्य रस द्वापर काल के कृष्णकालीन ब्रज की स्मृति दिलाता है । इस यात्रा के दौरान श्री बाबा महाराज की शास्त्रीय संगीत पर आधारित युगल महामंत्र की धुनों का रसमय गायन होता है । राधारानी ब्रजयात्रा में ही श्रीबाबा ने युगल महामंत्र की अनेकों नूतन धुनों की रचना की । इस यात्रा में निर्धन और धनी, प्रान्तीय एवं सांप्रदायिक भेद पूर्णतया मिट जाते हैं । भारत वर्ष के सभी प्रान्तों के एवं विदेशों तक के श्रद्धालु जन इस यात्रा में सम्मिलित होते हैं । समस्त सम्प्रदायों के वैष्णव भी बिना किसी संकीर्णता के यात्रा का लाभ उठाते हैं । यात्रा में जो अखण्ड कीर्तन होता है, उसमें नामकीर्तन को लेकर कोई साम्प्रदायिक दुराग्रह नहीं रहता । समस्त वैष्णव सम्प्रदायों के अनुयायीजन अपनी रुचि के अनुसार कीर्तन करने को स्वतंत्र रहते हैं । चालीस दिन तक यात्रियों को जिस रस,आनन्द और प्रेम की अनुभूति होती है,उसका प्रभाव यह होता है कि यात्रा के समापन पर अनेकों यात्री करुण क्रन्दन करते हुए अपने घरों को जाते हैं । घर जाने के बाद भी उन्हें निरन्तर यात्रा की स्मृति होती रहती है और वे पत्रों और फोन के द्वारा बताते हैं कि स्वप्न में भी उन्हें यात्रा का दर्शन होता है ।

यही वह यात्रा है जिसने जाने कितनों को श्रीराधामाधव का अनन्य उपासक बनाकर सांसारिक मोह माया से सदा–

सर्वदा के लिए दूर कर दिया, कई भक्तों को तो इस यात्रा के माध्यम से ही अखण्ड ब्रजवास की उपलब्धि हुई ।

'रसीली ब्रजयात्रा' ग्रन्थ की लेखिका बाल विदुषी मुरलिका जी भी इसी यात्रा से संस्कारवती होकर पूज्य श्री बाबा महाराज की अनुकम्पा से देश की विदुषी भागवत प्रवक्री बनीं । ब्रजयात्रा में सुश्री मुरलिका जी एवं उनके ताऊजी अति निःस्पृह भागवत प्रवक्ता डॉ.श्री रामजी लाल शास्त्री का अद्भुत योगदान चला आ रहा है । भागवत कथाओं से प्राप्त दैवी द्रव्य का बिना स्पर्श किए ही इन महान विभूतियों के द्वारा निःस्पृह भाव से राधारानी ब्रजयात्रा के लिए सर्वसमर्पण हो जाता है । उन्ही के निवास स्थल श्री राधा रस मंदिर से ४० दिनों तक यात्रियों की सेवा हेतु भोजन सामग्री लेकर विशाल वाहन प्रतिदिन यात्रा पड़ाव को जाया करते हैं ।

श्रीराधारानी ब्रजयात्रा की एक अन्य विशेषता यह है कि हजारों की संख्या में श्री चैतन्य महाप्रभु के अनुयायी बंगाली भक्त अतिशय श्रद्धा और उत्साह के सहित सुदूर बंगाल प्रान्त से इस यात्रा में सम्मिलित होते हैं । वे अत्यंत श्रद्धा-भक्ति के साथ अहर्निश कीर्तन करते हैं और बंगाल की ही श्रद्धामयी स्त्रियाँ दोनों समय अत्यधिक परिश्रम और सेवा भाव के सहित यात्रा पांडाल में दूर-दूर तक जाकर यात्रियों को भोजन प्रसाद का परिवेषण करती हैं ।

यात्रा के अन्त में विदाई समारोह का आयोजन होता है जिसमे श्री बाबा महाराज यात्रियों को यह संकल्प दिलाते हैं कि वे अपने नगरों और गाँवों में जाकर भगवन्नाम कीर्तन की धूम मचा दें, प्रभात फेरियों का शुभारम्भ करके देश और समाज की सेवा करें । श्री बाबा महाराज के इस दिव्य उद्बोधन का यह प्रभाव होता है कि यात्री गण अपने-अपने प्रान्तों,नगरों और गांवों में जाकर संकीर्तन प्रभात फेरियों का सञ्चालन करने के अति दुर्लभ जन कल्याणकारी कार्य में संलग्न हो जाते हैं ।

यात्रा समापन

४० दिन तक ब्रजयात्रियों को विलक्षण संकीर्तन-रस, ब्रजरज, ब्रजवासियों के प्रेम, ब्रज रस और श्रीबाबामहाराज के अभूतपूर्व सत्संग की प्राप्ति होती है । यह सब ब्रज स्वामिनी रास रासेश्वरी श्री राधारानी की कृपा से होता है । अतः उनकी कृपा की अनुभूति पूर्वक सभी यात्री ब्रजयात्रा समाप्त करके अपने-अपने गन्तव्य को चले जाते हैं इस अग्रिम कृपा की आशा और विश्वास के साथ कि अनवरत ब्रजभूमि का स्मरण बना रहे । हम ब्रज को न भूलें और ब्रज हमें न भूले तथा हम श्री बाबा महाराज को न भूलें और श्री बाबा महाराज हमें न भूलें ।

गोस्वामी तुलसीदासजी ने भी रामचरितमानस में पृथ्वी पर अवतरित इस धाम की महिमा का वर्णन करते हुए कहा – चार खानि जग जीव अपारा । अवध तजें तन नहिं संसारा ॥ *(श्रीरामचरितमानस, बालकाण्ड -३५)*

चार प्रकार के जीव सृष्टि में होते हैं – जरायुज, अण्डज, स्वेदज एवं उद्भिज्ज; यदि ये जीव भी श्रीधाम में रहते हैं और धाम में ही इनकी मृत्युहोती है तो फिर उनका संसार में पुनर्जन्म नहीं होता है । श्रीराधासुधानिधि के अनुसार –

यत् प्रेमामृतसिन्धुसाररसदं पापैकभाजामपि तद् वृन्दावनदुष्प्रवेशमहिमाश्चर्यं हृदि स्फूर्जतु ॥ (श्रीराधासुधानिधि - २६५)

यह धाम तो अत्यधिक पतित, पापैकभाजां प्राणी, जो पाप करने के सिवा और कुछ नहीं करते, और कुछ नहीं जानते, उनका केवल कल्याण ही नहीं करता अपितु उनको प्रेमामृतसिन्धु का भी सार, राधा-माधव के दिव्य रस का दान करने वाला है । श्रीधाम की कृपा से सुदुर्लभ 'श्रीसहचरी भाव' महापापी को भी प्राप्त हो जाता है; ऐसी इस ब्रज-वृन्दावन धाम की आश्चर्यजनक दुष्प्रवेश महिमा है । दुष्प्रवेश महिमा का अभिप्राय है कि धाम की ऐसी अगाध महिमा में लोग प्रवेश नहीं कर सकेंगे अर्थात् इस पर विश्वास नहीं करेंगे कि धामवास का ऐसा अद्भुत प्रभाव होता है ।

ब्रजयात्रा के अद्भुत चमत्कार

ब्रज की निधि पूज्य रमेश बाबा द्वारा संचालित श्रीराधारानी ब्रजयात्रा एवं उसकी चमत्कारपूर्ण घटनाएँ व अनुभूतियाँ -

श्रीबलदेव प्रसाद शुक्ल जिन्हें शुक्ल भगवान् कहकर सम्मानित किया जाता था, उनकी तपस्या के फलस्वरूप रामेश्वर भगवान् की कृपा से उन्हें सन् १९३७ में बहादुरगंज इलाहाबाद में एक पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई, जिसका नाम रामेश्वर प्रसाद शुक्ल रखा गया, प्रारम्भ से विश्वविद्यालय तक की शिक्षा इसी नाम से हुई । घर में लाड़-प्यार में इनको 'रमेश' नाम से पुकारा जाता था । सन् १९५४ में इलाहाबाद यूनिवर्सिटी से स्नातक की शिक्षा प्राप्त की, इसी बीच में 'प्रयाग संगीत समिति' से प्रभाकर की परीक्षा में टॉप किया यानि सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया । सन् १९५४ से श्रीबाबामहाराज ब्रज में आ गये और गह्वरवन, बरसाना स्थित मानगढ़, मानमंदिर में जो पहले खण्डहर और डाकुओं का अड्डा था, जहाँ लोग दिन में जाने में भी डरते थे, वहाँ रहने लगे । जब से बाबाश्री ब्रज में आये तब से आज तक ब्रज के बाहर नहीं गये ।

१९८८ में खण्डार तहसील जिला सवाई माधोपुर राजस्थान के प्रसिद्ध संत नित्यानंद जी महाराज, जिन्होंने अपना सारा जीवन अपने सेवकों के साथ नाम-प्रचार में लगा दिया, उन्होंने पूज्य बाबा महाराज से प्रार्थना किया कि आप ब्रज के बाहर नहीं जाते हैं, हमलोगों को ब्रज ८४ कोस की यात्रा करा दीजिये ।

पूज्य महाराजजी राजी हो गए इस शर्त पर कि किसी भी यात्री से शुल्क नहीं लिया जाएगा, यह यात्रा पूर्णतः निःशुल्क होगी । अपनी इच्छा से श्रद्धापूर्वक कोई भी जो कुछ भी सेवा करना चाहेगा, वह सेवा स्वीकार कर ली जायेगी । मई-जून में यात्रा प्रारम्भ कर दी गई । साधन कुछ भी नहीं थे, ११ बोरी सत्तू पिसा लिया गया था । भोजन पड़ाव पर ही बना लिया जाता था । उस समय मात्र २५० यात्री थे । रात्रि में तीन बजे से यात्रा प्रारम्भ हो जाती थी और प्रातः सूर्योदय होने के बाद लगभग नौ बजे तक दूसरे पड़ाव पर पहुँच जाती थी, उसके बाद स्नान आदि नित्य क्रिया होती थी । श्रीनित्यानंदजीमहाराज की भक्त मण्डली रसोई बनाती थी । मानमंदिर के भक्तगण तन्मयता के साथ कीर्तन करते थे, यात्रा में २४ घंटे कीर्तन चलता रहता था ।

आगरा के एक भक्त धनीराम शर्मा ने पूज्य महाराजजी से निवेदन किया कि कुछ भक्त यात्रा में आर्थिक सेवा करना चाहते हैं यदि उनका नाम बोल दिया जाय तो उनका भी मनोबल बढ़ेगा और अन्य लोगों को सेवा के लिए प्रेरणा मिलेगी और हमारी यात्रा का खर्च सहज में ही पूरा हो जाएगा परन्तु महाराजजी ने यह प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया यह कहकर कि गरीब आदमी जो मात्र ५ रु. या ११ रु. भेंट करते हैं उन्हें भोजन करने में कितना संकोच होगा, वे सोचेंगे कि कुछ अर्थदाताओं ने १० हजार या ५ हजार दिया है और हमने मात्र ५ या ११ रु. दिए हैं । उनके मन में पीड़ा होगी इसलिए हमें वह धन स्वीकार नहीं है । हम एक समय खिचड़ी खा लेंगे, भोजन एक ही समय कर लेंगे, लेकिन हमें वह सेवा नहीं चाहिए जिसमें अपने नाम की कामना हो । हमें यज्ञ राजस या तामस नहीं बनाना है । ऐसे लोगों से कह दो कि वे केवल यात्रा करें, सेवा वहाँ कर दें जहाँ उनका नाम हो ।

इसलिए **'श्रीराधारानी ब्रजयात्रा'** बहुत ही सात्विक यात्रा है, जिसमें अनेकों चमत्कार होते आ रहे हैं, उनमें से कुछ चमत्कार यहाँ वर्णित किये गए हैं –

१. डॉ.जगदीश लवानियाँ जो आबूधाबी में थे, उनके माता-पिता ने यात्रा की थी । वे वैद्य थे और यात्रा में बीमार यात्रियों की मलहम पट्टी व औषधि की व्यवस्था करते थे, वृद्ध थे, नंगे पाँव नहीं चल पाते थे । महाराज ने उन्हें जूते पहन कर चलने की अनुमति दे दी थी । महाराज जी ऊँचा गाँव में पर्वत पर कुछ चिन्ह दिखा रहे थे । इसी बीच उनके जूते में लगी छोटी कील (चोबा) का कहीं पारस से स्पर्श हो गया और वह सोने की बन गयी । इसके २-३ दिन बाद जब कील उनके पाँव में चुभने लगी तो उन्होंने उसे निकाला, पीले रंग की कील देखकर वह हैरान हुए, उसे घर जाकर स्टोव से तपाया तो वह चमकने लगी, मालूम पड़ा कि वह सोने की थी । जूते में सोने की कील कैसे ? यह समझ में आया कि उसका स्पर्श कहीं पारस से हो गया था इसलिए वह सोने की बन गयी थी । शास्त्रों के अनुसार ब्रजभूमि

दिव्य रत्नों,पारसमणि और चिन्तामणि से निर्मित है । ब्रज में आज भी ये मणियाँ है परन्तु हमें पहचान नही है ।

२. एक बार दाऊजी से यात्रा चली थी तो एक वृद्ध माता को रास्ते में उल्टी दस्त होने लगे, हैजे की सी स्थिति थी । उसे समीप के एक गाँव में छोड़ दिया गया यह कहकर कि पड़ाव पर पहुँच कर किसी वाहन से ले जायेंगे । ग्रामवासियों ने उसे बड़े प्रेम से रख लिया और कहा कि हम अच्छी तरह इनकी देखभाल करेंगे, आप कोई चिंता न करें । होनहार की बात कि २ घंटे बाद वह वृद्ध माता मर गई । ४-५ व्यक्ति उसे चारपाई पर डालकर यात्रा में ले आये । गर्गाचार्य जी के स्थान गिड़ाया गाँव पार कर हम लोग यमुना पार करके गए ही थे कि उन्होंने जोर से चिल्लाकर कहा- बाबा, वो बुढ़िया मर गयी । यात्रा रुक गई । उस बुढ़िया के गाँव के ११ आदमी यात्रा में थे, २ आदमी तुरंत अपने गाँव सैन्वे चले गए यह पूछने कि उसका अन्तिम संस्कार यात्रा में करें या गांव लाकर करें । उन दिनों फोन-मोबाइल आदि की व्यवस्था नहीं थी । पूज्य महाराज जी ने यात्रियों से कहा- देखो भाई ! इस वृद्धा के प्रति सच्ची सहानुभूति, श्रद्धांजलि व सेवा यही है कि उनके निमित्त कीर्तन किया जाये । श्री बाबा के कहने पर सभी ने बड़ी धूमधाम से नाचते-गाते हुए कीर्तन किया । कीर्तन का नेतृत्त्व स्वयं श्रीबाबा ने किया,उसका परिणाम यह हुआ कि वह बुढ़िया जीवित हो गयी, उसने आँखें खोली, मुंह खोला, उसमें कुछ पानी डाला गया, धीरे-धीरे उसकी चेतना बढ़ती गयी तो उसे पास में महावन डिस्पेंसरी में ले जाया गया । वहाँ डॉक्टरों ने उसे कुछ बोतल चढ़ाई, शाम को उसके गाँव के लोग उसे ले जाने के लिए ट्रैक्टर ले कर आ गए । उसके जीवित होने का समाचार पाकर उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई और वे लोग उसे अपने गाँव ले गए । उसके बाद वह बुढ़िया १७ साल तक जीवित रही ।

३. तीसरा चमत्कार केदारनाथ में हुआ । रात में चोरों ने भोजन बनाने के बर्तन गौरी कुण्ड में पटक दिए कि जब यात्रा चली जायेगी तब हम ले जायेंगे । प्रातःकाल होने पर जब रसोइया बर्तनों को सँभालने लगे तो देखा कि बर्तन नहीं थे । कोई व्यक्ति नहाने को कुण्ड में गया, जब नीचे गहरे पानी में गया तो एक बर्तन पाँव के नीचे आ गया । खोजने पर सब बर्तन मिल गए ।

४. चौथा चमत्कार वृन्दावन में हुआ । यात्रा राम जिवाई आश्रम में ठहरी हुयी थी । यात्रा में कैश व्यवस्था का काम दिल्ली के मित्तल सेठ संभाले थे । वह बोले-अब सब पैसे ख़तम हो गए हैं । कोई दूसरा व्यक्ति हिसाब सम्भाले, मैं यह सेवा नहीं कर सकता । पूज्य महाराजजी ने उनसे कहा - धैर्य रखो, सब कार्य राधारानी करेंगी । यह उन्ही की यात्रा है, हम लोग कुछ नहीं हैं । वह बोले- महाराज, मैं ये नहीं मानता, मुझे तो पैसा चाहिए इंतजाम करने को । इस घटना के २-३ घंटे बाद एक भक्त आए और उन्होंने बीस हजार रुपये का चेक पूज्य महाराज को अर्पित किया और उन्होंने वह चेक मित्तल साहब को व्यवस्था सँभालने के लिए दे दिया । पूर्व में प्रायः प्रत्येक तीसरे वर्ष अधिक मास में यात्रा हुआ करती थी । एक बार कुछ अमेरिका के भक्तों ने यात्रा में सम्मिलित होने की इच्छा व्यक्त की परन्तु कहा कि हम गर्मी में यात्रा नहीं कर सकते हैं, उन लोगों की वजह से १९९३ में अक्टूबर में दीवाली के अवसर पर ३० दिन की यात्रा रखी गयी, वह यात्रा भी अविस्मणीय रही । ज्योतिजी ने यात्रा में जो सेवा की उसकी आज भी लोग याद करते हैं। यात्रियों के यात्रा से आने के बाद वह उनके चरणों को गर्म पानी से धोती और रात्रि में सोने से पहले यात्रियों के चरणों में वैसलीन लगाती थी । एक बार यात्रा शेषशायी में रुकी थी । शिवचन्दी नाम का एक यात्री जिसे रात्रि में धुंधला दिखाई देता था, वह रात्रि में लघुशंका के लिए गया तो कुएँ में गिर गया। कुएँ में गिरने की आवाज होने पर लोग दौड़े और उसे बाहर निकाला गया । कोई चोट तो क्या उसके शरीर में कोई खरोंच भी नहीं आयी। उसने बताया कि मुझे तो हनुमान जी ने गोद में ले लिया था। वह हनुमानजी का भक्त था । सन् १९९५ में यात्रा अप्रैल मई में रखी गयी परन्तु वह समय भी अनुकूल नहीं रहा क्योंकि किसानों के लिए फसल का समय है । सन् १९९५ में जब यात्रा अप्रैल मई में रखी गई थी तो पंजाब के महात्मा कृष्णानन्द जी ने पूज्य महाराजजी से आग्रह किया कि यह यात्रा तो प्रतिवर्ष उठनी चाहिए जब सारा इन्तजाम श्रीजी करती हैं तो आप लोग क्यों चिंता करते हैं। भोजन के लिए

राशन के ट्रक और कम्बलों के ट्रक (यात्रियों के लिए) हम पंजाब से भिजवा दिया करेंगे । पूज्य महाराज जी ने स्वीकृति दे दी । हमने इसका विरोध किया था क्योंकि हम लोग जो प्रबन्ध में रहते थे, प्रायः अध्यापक थे और हमें इतनी लम्बी छुट्टियाँ प्रतिवर्ष मिलना कठिन था; पूज्य महाराज जी ने स्वीकार कर लिया । यात्रा का समय शरद पूर्णिमा से दो दिन पहले यानि आश्विन मास शुक्ल पक्ष त्रयोदशी रख दिया गया । मजे की बात यह रही कि कृष्णानन्द जी महाराज जिन्होंने प्रति वर्ष यात्रा उठाने का इतना आग्रह किया था और राशन-कम्बल आदि भेजने की जिम्मेदारी ली थी, उनके यात्रा में दर्शन ही नहीं हुए, वह आये ही नहीं ।

वास्तव में ये राधारानी यात्रा श्रीजी की है, उन्हीं की कृपा से इसका संचालन होता है । पूज्य महाराजजी कहते हैं कि किसी भी यात्री को लौटाओ नहीं । ये भाव रखो कि यात्री साक्षात श्रीकृष्ण हैं । इस भाव से सेवा करो । किसी यात्री को झिड़को नहीं । इस यात्रा का नाम है श्री राधा रानी ब्रज यात्रा, वे ही इसकी संचालिका हैं । महाराज जी कहते हैं कि हमारा नाम कभी यात्रा में मत रखना । हमारा नाम रखोगे तो फिर वो चमत्कार नहीं होंगे ।

पूज्य महाराज जी कहते हैं कि भगवान् की वाणी कभी असत्य नहीं होती है । भगवान् श्री कृष्ण ने गीता में कहा है – **अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते ।**

तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥

(श्रीमद्भगवद्गीता ९/२२)

जो अनन्य रूप से मेरा चिंतन करते हैं, उपासना करते हैं, उनके योगक्षेम का वहन मैं स्वयं करता हूँ । आज यात्रा में १५-१६ हजार यात्री प्रतिवर्ष चलते हैं । करोड़ों रूपये खर्च हो जाते हैं । हम लोगों की क्या सामर्थ्य है जो इतना खर्च कर सकें परन्तु श्री राधा रानी करने वाली हैं । इसलिए कभी कोई कमी नहीं आती है । ऐसा कोई वर्ष नहीं होता जो यात्रा में चमत्कार न हों कृपा की अनुभूति न हो ।

एक वृद्ध माता यात्रा करने आई थीं, वह रोजाना पूज्य महाराज जी से प्रातः आरती के बाद लगभग ५ बजे लौंग लेने आया करती थीं । एक बार यात्रा रमणरेती में रुकी थी । वल्लभगढ़ से उनके घर वाले जिनका मैडीकल स्टोर था, उसे लेने आ गये थे यद्यपि वह कुछ बीमार भी थी परन्तु यात्रा छोड़ कर जाना नहीं चाहती थी । उसी रात में लगभग २ बजे उस बुढ़िया की मृत्यु हो गयी परन्तु आश्चर्य की बात यह हुई कि अगले दिन नित्य की भांति वह महाराज जी के पास आरती के बाद सबेरे गई किन्तु बोली कुछ नहीं और लौंग के लिए हाथ फैला दिया । महाराज जी बोले - अरे भाई, इसे लौंग दे दो । उसने लौंग लिया और चली गयी । अगले पड़ाव पर सूर्यास्त के बाद नित्य की भांति जब सत्संग हुआ तो लोगों ने महाराज जी को बताया कि कल रात को लगभग २ बजे उस बुढ़िया का देहांत हो गया । पूज्य महाराज जी ने कहा कि हम कैसे मानें, वह तो नित्य की भांति आज हमारे पास आरती के बाद सुबह ६ बजे लौंग लेने आई थी और हमने एक संत को उसे लौंग देने को कहा था और वह लेकर चली गयी परन्तु बोली कुछ नहीं थी लेकिन आज वह अन्य दिनों की अपेक्षा अधिक देर तक खड़ी हुई मुझे बहुत देर तक देखती रही ।

लगभग दो वर्ष पूर्व की घटना है, बंगाल के दो यात्री जो बड़े गरीब थे, फटा हुआ वस्त्र घुटनों तक पहने थे, एक बनियान थी, वे मान मन्दिर में प्रातः सत्संग के बाद पूज्य महाराज जी के पास गए, उनके चरणों में प्रणाम किया और बोले- बाबा ! हम यात्रा करना चाहते हैं । महाराज जी ने उनसे कहा – करो यात्रा, तुम्हे रोकता कौन है ? उन्होंने कहा- बाबा, हमारे पास टका(पैसा) नहीं है । महाराज जी बोले कि हमारे यहाँ यात्रा का कोई शुल्क नही हैं । ऐसा सुनकर उन दोनों ने एक-एक रुपया और एक-एक नारियल भेंट किया । महाराज जी अपने सेवक एक सन्त से बोले – इसे संभालकर रख लो, इनका एक रुपया एक लाख के बराबर है । अगले ही दिन एक चमत्कार हुआ, पंद्रह-सोलह वर्ष की एक बालिका उसी समय सत्संग के बाद पूज्य महाराज जी के कमरे में पहुँची । उस समय वहाँ पंद्रह बीस लोग बैठे थे । उसने महाराज जी को प्रणाम करते हुए कहा- बाबा ! यात्रा में चलने की तो मेरी भी इच्छा थी किन्तु मैं चल नही पा रही हूँ । मेरी माँ ने मुझे भेजा है और कहा है कि यह धनराशि बाबा को दे आना । ऐसा कहकर उसने एक-एक लाख की हजार नोट वाली दो गड्डियां श्री बाबा के सामने रखीं । महाराज जी को वही कल वाली एक रुपये

वाली बात याद आ गयी कि ये एक रूपया नहीं एक लाख के बराबर है ।महाराज जी ने उससे पूछा-लाली ! तेरा नाम क्या है ? वह बोली- बाबा ! मेरा नाम राधिका है । अब मैं जा रही हूँ, माँ मेरा इन्तजार कर रही होगी, ऐसा कहकर वह कमरे से बाहर चली गयी । पूज्य महाराज जी ने सेवकों से कहा कि देखना यह कहाँ जा रही है ? सेवकों ने बाहर जाकर देखा तो वह नीचे जीने तक गयी फिर एकदम गायब हो गयी । जीने में नीचे आसपास कहीं नहीं मिली, न जाने कहाँ अंतर्धान हो गयी ।

मेरा यह विश्वास है कि छोटे-छोटे निर्मल बालक-बालिकाएँ निश्छल-निष्काम आराधना करते हैं तो श्यामा-श्याम यात्रा में इन सबके साथ रहते हैं तभी तो यात्रा में इतना आनंद आता है । भगवान् की प्रतिज्ञा है –

नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न च ।
मद्भक्ताः यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद ॥ (पद्मपुराण)

धामी भगवान् से ज्यादा महत्व भगवान् के धाम का होता है । जो अपराध भगवान् स्वयं दूर नहीं कर पाते वह अपराध उनके धाम की सेवा से, धाम की परिक्रमा करने से दूर हो जाता है । मोहवश ब्रह्माजी से अपराध हुआ, वह गोवत्स व वत्सपालों को चुरा ले गए । श्रीकृष्ण ने उतने ही रूप बना लिए, जितने ग्वाल और बछड़े थे । एक वर्ष बाद ब्रह्मा जी ने आकर देखा तो वहाँ तो वैसे ही बछड़े और ग्वाल हैं । ब्रह्मलोक में देखा तो वहाँ भी वैसे ही पाए और तो उन्हें भ्रम हुआ कि असली ये हैं या वे हैं । पहिचान मिलाने गए तो ठाकुर जी ने एक और लीला कर दी । ब्रह्मा का रूप बनाकर ब्रह्मलोक में पहुंचे और पहरेदारों से बोले कि मेरे हुक्म के बिना कोई अन्दर नही आना चाहिए । यहाँ अनेकों नकली ब्रह्मा मेरा रूप बनाए घूमते रहते हैं । जब ब्रह्माजी ही भगवान् की लीला नहीं समझ पाए तो बेचारे द्वारपाल क्या समझेंगे, वे बोले - सरकार ! बिना आपकी आज्ञा के किसी को यहाँ अन्दर नहीं आने दिया जाएगा । अब इधर असली ब्रह्माजी ब्रह्मलोक में आए तो जो द्वारपाल ब्रह्माजी को देखकर खड़े हो जाते थे, जय-जयकार करते थे वे आज ब्रह्मा जी को धक्का देकर निकाल रहे हैं और बोले कि तुम्हारे जैसे बहुरुपिया बहुत घूमते हैं । सरकार का आदेश नहीं है अन्दर जाने का ।

कृष्ण भरोसौ छोड़ि के, करै भरोसौ और ।
सुख सम्पत्ति की कहा कहों, वाको नरकहु नाही ठौर ॥

ब्रह्माजी समझ गए कि प्रभु के अलावा हमारे लोक में जाने की किसी की सामर्थ्य नहीं है, फिर तो उन्होंने बहुत स्तुति की, अपने को धिक्कारा कि मैंने आप पर अपनी माया का प्रयोग किया, प्रभो ! मेरे अपराध को आप क्षमा करें । जैसे - उदरस्थ शिशु के लात मारने को माँ अपराध नहीं मानती है बल्कि प्रसन्न होती है, उसी प्रकार मैं भी आपका उदरस्थ शिशु हूँ क्योंकि आपके नाभिकमल से ही उत्पन्न हुआ हूँ । अंत में ब्रह्मा जी ने ब्रजवासियों के सौभाग्य की प्रशंसा करते हुए कहा –

अहो भाग्यमहो भाग्यं नन्दगोपव्रजौकसाम् ।
यन्मित्रं परमानन्दं पूर्णं ब्रह्मसनातनम् ॥

(श्रीमद्भागवतजी १०/१४/३२)

ये ब्रजवासी धन्य हैं जिनके मित्र परब्रह्म परमेश्वर श्रीकृष्ण हैं । जो कभी इनके कंधे पर चढ़ते हैं तो कभी वे इनके कंधे पर चढ़ते हैं । हम भले ही ब्रह्मा बन गये परन्तु हमारा ऐसा सौभाग्य नहीं है ।

हे प्रभो! आप ऐसी कृपा करें कि इस ब्रजभूमि में आप हमें कंकड़-पत्थर, लता-पता, घास-औषधि, वृक्ष आदि कुछ भी बना दें ताकि इन ब्रजवासियों की चरणरज हमारे मस्तक पर पड़े और हम कृतार्थ हो जाएँ ।

ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसार ब्रह्माजी यहाँ बरसाने में ब्रह्माचल पर्वत बने हैं । ब्रह्माजी के चार मुख हैं, इसी प्रकार इस पर्वत के भी ४ शिखर हैं – १. मानगढ़ २. दानगढ़ ३.भानुगढ़ ४. विलासगढ़ - जो ब्रह्माजी के मुख के प्रतीक हैं । नन्दगाँव में भगवान् शिव नन्दीश्वर पर्वत बने हैं । गोवर्धन में विष्णु भगवान् गिर्राज पर्वत बने हैं । इसप्रकार सृष्टि के सबसे बड़े देवता ब्रह्मा ,विष्णु, महेश इस ब्रज भूमि में पर्वत बने हैं ताकि ब्रजवासियों की चरणरज हमारे मस्तक पर पड़ती रहे ।

ब्रह्माजी ने बहुत स्तुति की परन्तु भगवान् बोले नहीं । अंत में ब्रह्माजी ने **'त्रिः परिक्रम्य'** तीन बार ब्रज ८४ कोस की परिक्रमा की, ब्रज की सेवा की तब श्रीकृष्ण प्रसन्न हुए ।

श्रीराधा-शक्ति का स्वरूप 'संकीर्तनाराधन'

ब्रज की सेवा क्या है ? ब्रज के पर्वतों का संरक्षण, ब्रज के कुण्ड-सरोवरों का जीर्णोद्धार, यमुनाजी की सुरक्षा, वनों का संरक्षण, ब्रज की गौओं की रक्षा व उनका पोषण (गौ-सेवा) । श्रीकृष्ण ब्रह्माजी का कष्ट निवारण नहीं कर सके परन्तु जब उन्होंने ब्रज धाम की सेवा की, परिक्रमा की, तभी उनके कष्ट का निवारण हुआ और तभी से ब्रजयात्रा का प्रचलन हुआ । धाम की परिक्रमा, सेवा करने से सभी प्रकार के अपराधों का शमन, निराकरण हो जाता है । इसीलिए हमारे पूज्य महाराज ने प्रतिवर्ष आश्विनी मास शुक्ल पक्ष त्रयोदशी से ८४ कोस की ब्रज यात्रा का प्रारम्भ किया है ।यह यात्रा प्रतिवर्ष होगी, सबके लिए निःशुल्क है । अनेकों यज्ञों का फल, दान-पुण्य, तपस्या आदि शुभ कर्मों का पुंज इस यात्रा के एक अंश के फल को नहीं पा सकता है क्योंकि इसमें हर समय भगवन्नाम-संकीर्तन होता है । प्रत्येक स्थल की महिमा को पूज्य श्री बाबा महाराज बताते हैं । इस यात्रा में उन्हीं भाग्यशाली निष्काम लोगों का द्रव्य लगता है जिन्हें नाम की भूख नहीं है, हमारे मानबिहारीलाल उसी सात्विक भावनाओं के द्रव्य को स्वीकार करते हैं ।

जो लोग किसी कारणवश यात्रा नहीं कर पाते हैं और अपनी सामर्थ्य के अनुसार अन्य यात्रियों के यात्रा करने में सहयोग करते हैं तो उन्हें उन यात्रियों के यात्रा करने का पुण्य सहज में ही प्राप्त हो जाता है । अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करने के लिए स्वयं यात्रा करते हुए भगवन्नाम लेते हुए अन्य सभी के प्रति सौहार्द्र एवं सहयोग की भावना रखें ।

सन् १९९७ में यमुनाजी में बड़ी भयंकर बाढ़ आई थी । कलक्टर ने आस-पास के सब गाँव खाली करा दिए थे । उस समय 'श्रीराधारानी ब्रजयात्रा' वृन्दावन में रुकी थी । लोगों ने महाराज जी से कहा कि महाराज ! अब तो २-३ दिन यहाँ वृन्दावन में ही रुकना पड़ेगा क्योंकि यमुना पार इस समय नहीं जा सकते हैं । महाराजजी बोले – "ठीक है ।" लेकिन अगले दिन जब यात्रा चलने का समय हुआ पूज्य महाराज जी चल दिये । केशीघाट से यमुना पार करके माँट और फिर भांडीरवन जाना था, लगभग सौ सवा सौ लोग यमुना पार जाने को स्टीमर में बैठ गये । कुछ लोग नावों से गए । एक विचित्र घटना यह हुई कि नदी के बीच जब स्टीमर पहुँचा तो उसका डीजल खत्म हो गया । पूज्य महाराज जी ने कहा अब एक ही उपाय है, तन्मयता से कीर्तन करो । सभी ने बड़े जोर से कीर्तन किया । स्टीमर का ड्राईवर दूसरे स्टीमर से डीजल लेने वृन्दावन चला गया । स्टीमर में बड़े आर्त भाव से सब लोग कीर्तन कर रहे थे । संयोग से स्टीमर एक झाड़ी में फँस गया और वहीं लगभग ४० मिनट खड़ा रहा, कुछ देर बाद ड्राइवर वृन्दावन पैट्रोल पम्प से डीजल लाया और स्टीमर में डाला तब स्टीमर चला । तब तक भगवन्नाम के प्रभाव से स्टीमर खड़ा रहा, नहीं तो सैकड़ों आदमियों की जान चली जाती । कीर्तन के प्रभाव से सब सुरक्षित रहे ।

सन् २००५ की घटना है एक बार यमुना जी में अचानक पानी बढ़ गया था । वृन्दावन से नावों की व्यवस्था हो नहीं पाई थी । सेई गाँव से यमुना पार करके भांडीरवन जाना था । अगले दिन बड़ी विचित्र लीला हुई । हम लोग सबेरे जब यमुना पार होने को थे, यमुना जी का पानी ३ फुट उतर गया और हमारी यात्रा बिना नाव के यमुना पार पैदल उतर गयी तथा उसी दिन शाम को फिर पानी बढ़कर ७-८ फीट हो गया । यह प्रभु की विशेष कृपा का चमत्कार सभी ने अनुभव किया ।

एकबार राधारानी ब्रजयात्रा अपने अंतिम चरण में कामाँ का दो दिवसीय पड़ाव समाप्त करके बरसाना वापस लौट रही थी । उन दिनों डीग और कामाँ तहसील में पर्वतों का खनन चल रहा था । जब यात्रा सुदेवीसखी के गाँव सुनहरा पहुँची तो वहाँ एक संत यात्रा का स्वागत-सत्कार कर रहे थे । उन्होंने श्री बाबा महाराज को व यात्रियों को स्वागत हेतु गाँव में एक तम्बू में निमंत्रित किया था, वहीं सभी को प्रसाद भी वितरित किया जा रहा था । उस समय राधा रानी ब्रजयात्रा की ओर से एक कैमरे के द्वारा ब्रज के लीलास्थलियों की वीडियो रिकॉर्डिंग की जाती थी, इसी उद्देश्य से एक कैमरामैन एक संत व कुछ अन्य मान मन्दिर के सदस्यों के साथ गाँव में थोड़ा आगे जाकर जहाँ कुछ लोग पर्वत का खनन कर रहे थे, उनकी फोटो ले रहा था ।

मानमंदिर के सदस्यों को पर्वत के खनन की तस्वीरें लेते देख खननकर्ता भड़क उठे और वे अत्यधिक क्रोधावेश में आकर यात्रा को आघात पहुँचाने के लिए चले आए । यात्रा के ध्वनि विस्तारक यंत्र जिनसे दूर-दूर तक नाम संकीर्तन की ध्वनि प्रसारित होती थी, उन पर डंडों से प्रहार करने लगे, इसी प्रकार जो संत कैमरामेन के साथ खनन स्थली की वीडियो रिकॉर्डिंग करा रहे थे, उनको भी इन खननकर्ता लोगों ने एक कँटीली झाड़ी में पटक दिया तथा उनके सिर पर पत्थरों से प्रहार किया, इसी प्रकार वे यात्रा को क्षति पहुँचाने का भरसक प्रयास करने लगे । कुछ अन्य लोग श्री बाबा महाराज के पास जाकर कलह करने लगे । पूज्य श्री ने उन्हें समझाने का बहुत प्रयास किया परन्तु वे शांत नहीं हुए, इसके बाद ये खनन कर्ता बन्दूक लेकर आ गए और श्री बाबा महाराज पर गोली चलाने के उद्देश्य से उनके पीछे बैठ गए । मान मंदिर के सदस्यों ने बाबा श्री पर हमले की तैयारी देखी तो वे भी श्री बाबा महाराज को घेरकर बैठ गए ताकि बन्दूक की गोली यदि चले तो वह श्री बाबा का स्पर्श भी न कर सके । ऐसी विस्फोटक स्थिति में श्री बाबा महाराज ने स्वरचित पद 'राधे किशोरी दया करो' गाना आरम्भ किया । जैसे ही श्री बाबा द्वारा इस पद का गान हुआ, मान मंदिर की समस्त साध्वियाँ खड़ी होकर नृत्य करने लगीं , उन्हें नृत्य करते देखकर अन्य यात्री भी नृत्य करने लगे । खून-खराबे की हद तक आ पहुँची विकराल परिस्थिति नृत्य और गान के रसमय वातावरण में परिवर्तित हो गयी । श्री बाबा के इस पदगान का यह प्रभाव हुआ कि हत्यारे बंदूकें लेकर हतप्रभ होकर देखते ही रह गए, उन्हें गोली चलाने का साहस नहीं हुआ और समस्त यात्री नृत्य और गान करते हुए सुनहरा से पूर्ण सुरक्षित होकर बरसाने की ओर चल पड़े । गाँव में कुछ खनन कर्ता पत्थर लेकर बैठे थे कि हम यात्रियों पर पत्थरों से प्रहार करके यात्रा को भीषण आघात पहुँचाएँगे किन्तु वे भी अभूतपूर्व कीर्तन और नृत्य के आगे धराशायी होकर केवल मूकदर्शन बनकर देखते रहे । उसी समय राजस्थान सरकार की ओर से पुलिस दल आ पहुँचा और वे राधारानी ब्रजयात्रा को खननकर्ताओं के आघात से बचाकर उत्तर प्रदेश की सीमा तक छोड़ आए ।

सन् १९९८-९९ की यात्रा के दौरान पिसाया गाँव में पुनः एक विलक्षण घटना घटी । अचानक ही बहुत तेजी के साथ आंधी-तूफ़ान आ गया, भीषण तूफ़ान के आघात से यात्रा के तम्बू उखड़ने लगे । यात्रा प्रबंधको की ओर से यात्रियों से कहा गया कि वे तम्बू के बाँस-बल्लियों को कसकर पकड़े रहें । तूफ़ान की विकरालता को देखकर श्री बाबा महाराज ने स्वयं कीर्तन करना आरम्भ कर दिया, सभी यात्री भी बाबा के साथ कीर्तन करने लगे । महाराज श्री ने ऐसा आवेश युक्त कीर्तन किया कि बहुत देर तक बिना रुके वह कीर्तन करते रहे, उन्हें अपने तन की भी सुध बुध नहीं रही, कीर्तन करते समय उन्हें आसपास के किसी भी मनुष्य की उपस्थिति का आभास नहीं हो रहा था, वह तो केवल अपने इष्ट श्री राधा माधव की स्मृति में पूर्णतया तन्मय हो चुके थे । उस समय पूज्य श्री के कीर्तन के साथ ढोलक वादक भी इतनी तीव्र गति से ढोलक बजा रहे थे कि उनकी उँगलियों से रक्त का प्रवाह बह निकला । इस उद्दाम कीर्तन का यह प्रभाव हुआ कि भीषण आंधी तूफ़ान का वेग पूरी तरह शांत हो गया । इसके बाद यात्रियों ने तम्बू के बाहर देखा कि पण्डाल से थोड़ी दूर के क्षेत्र में घनघोर वर्षा हुई थी परन्तु पंडाल के आसपास वर्षा की एक बूँद भी नहीं गिरी थी । यह अभूतपूर्व चमत्कार श्री बाबा महाराज के कीर्तन के प्रभाव से हुआ था ।

सन् १९९९ में राधारानी ब्रजयात्रा जब माँट कस्बे से होकर भांडीरवन की ओर जा रही थी तो माँट के बाजार में एक वेशधारी कुटिल साधु ने श्री बाबा महाराज जी को विष दे दिया था । वह बाबा के पास आया और बोला- 'महाराज'! यह लीजिये त्रिवेणी संगम का जल ।' इस जल में तीक्ष्ण विष मिला हुआ था । बाबाश्री ने उस जल को मुख में डाल लिया तो उन्हें इसका स्वाद बहुत तीखा प्रतीत हुआ परन्तु श्री राधा रानी के अनन्य भक्त श्री बाबा महाराज के ऊपर इस भीषण विष का कुछ भी प्रभाव नहीं हुआ, विष पान के बाद श्री बाबा आगे बढ़े तो बहुत बड़ा ब्रजवासियों का समुदाय उनके स्वागत के लिए खड़ा था । श्री बाबा ने उन्हें संबोधित किया, प्रभात फेरी चलाकर समाज कल्याण की भावना के प्रति प्रेरित किया । इसके पश्चात जब यात्रा अपने पड़ाव स्थल भांडीरवन पहुँची तो रात्रि के समय वही विष

दाता साधु श्री बाबा महाराज के पास क्षमा माँगने आया, परम करुणा सिन्धु श्री बाबा महाराज ने उसके अक्षम्य अपराध पर कुछ भी दोष दृष्टि न करते हुए उसे क्षमा कर दिया ।

जिन दिनों ब्रज के डीग और कामाँ तहसील में पर्वतों का खनन अपनी चरम सीमा पर पहुँच गया था तो श्री बाबा महाराज इस खनन की रोकथाम हेतु सन् २००९ की यात्रा में आमरण अनशन पर स्वयं ही बैठ गए, इस संकल्प के साथ कि जब तक ब्रज पर्वतों पर हो रहे खनन को सरकार प्रतिबंधित नहीं कर देगी तब तक मेरे मुख में जल भी नहीं जाएगा । श्रीबाबामहाराज को आमरण अनशन करते देखकर हजारों यात्री भी अनशन पर बैठ गए । यहाँ तक कि मान मंदिर गुरुकुल के छोटे-छोटे बच्चे भी आमरण अनशन पर बैठ गए । बच्चों से लोगों ने कहा कि तुम लोग अनशन मत करो,भोजन ग्रहण कर लो परन्तु श्री बाबा महाराज के प्रति पूर्ण समर्पित बच्चों ने कहा-जब तक श्री बाबा महाराज अन्न-जल ग्रहण नहीं करेंगे तब तक हमारे लिए भी अन्न-जल ग्रहण करना असंभव है । श्री बाबा महाराज और हजारों यात्रियों तथा छोटे बच्चों द्वारा आमरण अनशन पर बैठने का यह परिणाम हुआ कि बारह घंटे बाद ही विजय पत्र आ गया । रात को बारह बजे राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमंत्री ने फोन द्वारा श्री बाबा महाराज से आग्रह किया कि आप अपना अनशन समाप्त कर दीजिये क्योंकि पर्वत खनन रोकने हेतु आपकी मांगें स्वीकार कर ली गयी हैं । पूरे डीग और कामाँ तहसील में पर्वतों के खनन पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगा दिया गया है । श्री बाबा महाराज द्वारा यात्रा काल में किये गए इस ऐतिहासिक कृत्य का दीर्घकालिक परिणाम हुआ और आज भी ब्रजभूमि के समस्त पर्वत पूर्ण सुरक्षित होकर आनंद से आसमान की ओर सिर उठाये हुए मानो श्री बाबा महाराज के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त कर रहे हैं ।

कई वर्षों पूर्व की एक यात्रा में परम ब्रज निष्ठ संत श्री सखीशरण महाराज जी की शिष्या कानपुर की एक महिला अस्वस्थ हो गयी । यात्रा के महावन रमण रेती आने पर तो उसकी हालत और अधिक खराब हो गयी । उसकी चिंताजनक स्थिति को देखकर सखी शरण महाराज जी ने श्रीबाबामहाराजजी से प्रार्थना की कि इस महिला का किसी अच्छे चिकित्सक के द्वारा इलाज कराया जाय । सखी शरण महाराज के आग्रह करने पर पूज्य बाबा श्री ने रमण रेती में गुरु शरणानन्द जी से उनके स्वयं के चिकित्सालय में उस महिला का इलाज कराने को कहा । उस महिला का जब रमण रेती के चिकित्सालय में इलाज चल रहा था तो चेतनावस्था में ही उसे यमदूतों के दर्शन हुए । यमदूतों को देखकर के वह घबरा गयी और चिल्लाने लगी कि मुझे छोड़ दो, अभी मुझे मत ले जाना, मेरे बच्चे बहुत छोटे हैं, मेरे बिना वे अनाथ हो जायेंगे । उसी समय अपनी रक्षा हेतु वह आर्त स्वर में श्री बाबा महाराज को पुकारने लगी । जब वह बाबा श्री को पुकार रही थी तभी उसने देखा कि उसके सामने श्री बाबा महाराज खड़े हैं, उनके शरीर से प्रकाश निकल रहा है और वे हाथ उठाकर उसे अभय दान दे रहे थे । कुछ समय बाद बाबा अंतर्धान हो गए तब उसने अपने साथ के लोगों से कहा कि मुझे यहाँ से अभी इसी समय राधारानी ब्रजयात्रा में ले चलो। इसके बाद उसको यात्रा स्थल पर लाया गया और वह पूर्णतया स्वस्थ हो गयी ।

सन् २०१६ की ब्रज यात्रा में भी एक विलक्षण चमत्कार हुआ । सागर (म.प्र.) के एक भक्त सन् २०११ से लगातार राधा रानी ब्रज यात्रा में सम्मिलित होते रहे थे परन्तु २०१६ में उनकी पुत्र वधू के घातक बीमारी की चपेट में आने के कारण वह यात्रा में नहीं आ सके । उनके साथ जो अकल्पनीय, अविश्वसनीय घटना घटी, २०१६ की यात्रा में कामाँ में आकर सबके समक्ष उसका पूरा विवरण उन्होंने सुनाया । उनकी पुत्रवधू जिस रोग से ग्रसित थी, उसके इलाज हेतु वह मुंबई, नागपुर आदि शहरों में गए तो डॉक्टरों ने बताया कि उसको कैंसर है और ये जानलेवा बीमारी है, इसका कोई इलाज नहीं है अतः इन्हें घर पर ले जायें । इसके बाद उन्होंने अपनी पुत्रवधू को भोपाल के अस्पताल में भर्ती करा दिया । वहाँ भी डॉक्टरों ने यही कहा कि इसे कैंसर है और इसके बचने की कोई सम्भावना नहीं है । अत्यधिक कष्ट और चिंता के कारण इन सज्जन के सीने में दर्द होने लगा और हार्ट अटैक पड़ने की सम्भावना होने लगी । तब इन्होंने घबराकर अस्पताल में श्री बाबा महाराज और राधा रानी को याद किया, फिर इन्हें नींद आ

गयी तो स्वप्न में इन्होने देखा कि श्री बाबा महाराज हँसते हुए इनके पीछे आ रहे हैं और इनके पास आकर बैठ गए । स्वप्न में ही यह व्यक्ति डॉक्टरों से अपनी पुत्र वधू के विषय में बात करते कि वह बचेगी अथवा नहीं। स्वप्न में हँसते हुए श्री बाबा महाराज १० मिनट इनके आगे पीछे रहे । जब इनकी नींद खुली और यह अपनी पुत्र वधू के पास गए तो वह बोली कि अब मुझे आराम है, ऐसा लगता है कि मुझे कोई बीमारी नहीं है । इन सज्जन के पास सन् २०१६ की यात्रा का पर्चा किसी ने पहुँचा दिया था, उसे यह प्रतिदिन देखा करते और विचार करते थे कि आज यात्रा अमुक स्थान पर गयी होगी, उसे अपने सीने पर रखकर यह सो गए और तभी स्वप्न में बाबा का दर्शन हुआ । उसके बाद से इनकी पुत्र वधू के स्वास्थ्य में सुधार हो गया । मुंबई के डॉक्टरों की भी रिपोर्ट आई कि इनकी पुत्र वधू को कैंसर नहीं है । पुत्र वधू का स्वास्थ्य भी सुधर गया, अब वह पूर्णतया स्वस्थ है, इसी प्रकार इन व्यक्ति के सीने में जो दर्द होता था और हार्ट फेल होने की आशंका लगती थी वह बीमारी भी पूर्णतया दूर हो गयी । अब वे सपरिवार कुशल हैं और इस कुशलता का समाचार देने के लिए वह २०१६ की यात्रा के अंतिम दिन कामाँ में आए थे ।

एक बार राधारानी की प्राकट्य भूमि 'रावल' ग्राम में यात्रा के पड़ाव के समय रात को १० से १२ बजे भक्त लोग श्रीजी की स्मृति में भावविभोर होकर कीर्तन कर रहे थे । अर्द्ध रात्रि का समय था, समस्त यात्री गहरी निद्रा में शयन कर रहे थे । उसी समय कीर्तन करने वाले भक्तों को अचानक अत्यंत सुमधुर वंशी की तान सुनाई पड़ी ।कीर्तन करने वाले भक्त उस मीठी तान को सुनकर आश्चर्यचकित होकर देखने लगे कि यह मधुर वंशी ध्वनि कहाँ से आ रही है, इसे कौन बजा रहा है ? भक्तों ने अनुमान लगाया कि संत नरसिंह दासजी मुरली बजा रहे होंगे क्योंकि वे ही राधारानी ब्रजयात्रा में सुमधुर मुरली वादन किया करते हैं किन्तु सबने देखा कि उस समय वह भी निद्रामग्न थे । फिर यह वंशीवादन कौन कर रहा था, जिन भक्तों ने इस मीठी धुन को सुना उन्होंने यही कहा कि हम लोगों ने अपने जीवन में कभी भी इतनी मधुर वंशी ध्वनि पहले कभी नहीं सुनी थी । वंशी ध्वनि कुछ देर तक गूंजती रही,बहुत ढूंढने पर भी वंशी वादक का कोई पता नहीं पड़ रहा था । अगले दिन जब यह घटना श्रीबाबा महाराज को बताई गई तो उन्होंने यही कहा कि यह ब्रज भूमि है,भावपूर्ण निष्काम आराधना करने पर भगवान् आज भी इस ब्रजभूमि में किसी न किसी प्रकार अपना अनुभव कराते रहते हैं । अतः यह वंशी ध्वनि किसी और की नहीं अपितु श्रीजी की प्राकट्य भूमि 'रावल' ग्राम में श्री राधारानी की कृपा से मुरलीमनोहर श्यामसुंदर के वंशीवादन की ही ध्वनि थी ।

अद्भुत महिमाशालिनी 'राधाराधना'

'राधारानी ब्रजयात्रा' होने से यूं तो प्रत्येक वर्ष यात्रा में कोई न कोई अभूत घटना संघटित होती है, यह इसकी अपनी अनूठी पहिचान है । इस वर्ष भी साक्षात् दर्शन किया हजारों यात्रियों ने श्रीराधारानी की कृपा का ।

आज हसनपुर में पड़ाव पड़ा हुआ है, दूर-दूर तक यात्रियों के तम्बू हैं, समुचित विद्युत- है । रात्रि में देखो तो कोई दिव्य लोक मालूम पड़ता है । अखण्ड नाम ध्वनि के साथ सभी ब्रजयात्री अपनी कल की व्यवस्था यात्रा के लिए तैयारी में जुटे हैं । प्रबन्धकों द्वारा पता चला कि कल की यात्रा स्थगित करने का विचार है क्योंकि यमुना जी में एकदम १० फुट जल चढ़ गया है, केवल एक नाव है जिससे १५ हजार यात्रियों का पार होना कल सन्ध्या तक भी सम्भवनहीं है । स्थानीय ब्रजवासियों का भी यह कहना था – हसनपुर में एक दिन और विश्राम किया जाय अथवा सेतुमार्ग से यमुना पार की जाय किन्तु सेतुमार्ग में २० कि. मी. का मार्ग बढ़ जाता है अतः वृद्धयात्रियों के लिए यह सम्भवनहीं है । कल की यात्रा हजारों यात्रियों के लिए चिन्ता का विषय बन गई थी । यात्रा के प्रबन्धकगण भी चिन्तित थे यह बात लेकर किन्तु पूज्य बाबा श्री तो कहाँ रुकने वाले हैं । भीषण वर्षा में भी अनेक बार पूज्य बाबा श्री अकेले ही यात्रियों को छोड़कर यात्रा करने चल दिये थे, दैव ही पराभूत हो जाता पूज्य श्री नहीं । प्रातः होते-होते पूज्य बाबा श्री का अबाध गति से यात्रा के लिए निकल देना एवं इधर यमुना का भी तट तोड़ने वाला तीव्र प्रवाह ..... । प्रबन्धकों को बहुत शोचनीय स्थिति का सामना करना पड़ रहा था ।

"न तप्यसेऽग्निना मुक्तो गङ्गाम्भः स्थ इव द्विपः ॥"

(श्रीभागवतजी ११/७/२९)

'पूज्य बाबा महाराज' तो हजारों के लिए जो प्रतिकूल थी उस परिस्थिति में भी आनन्दित थे । संध्याकालीन सत्संग में अपना अटल विचार सुना भी दिया, कल की यात्रा होगी, यमुना के आरोहण-अवरोहण से श्रीराधारानी ब्रजयात्रा स्थगित नहीं होगी । सहज ही निर्णय दे दिया मानो कल होने वाला चमत्कार इन्हें पूर्व ही विदित था । यात्री भी तैयार थे कल के लिए, जब पूज्य बाबा महाराज जाएंगे तो हम सभी जाएंगे । इधर रात्रि में १२ बजे यात्रा समिति के सदस्य वाहनों द्वारा यमुना जी की स्थिति जानने गये । इन्हें नींद कहाँ? देखा कि प्रवाह बराबर बढ़ ही रहा है ।

"होइहि सोइ जो राम रचि राखा ॥"

(श्रीरामचरितमानस, बालकाण्ड - ५२)

कहकर सो गये ..... । प्रातः श्रीराधामानबिहारी लाल की आरती के साथ शंखनाद हुआ, घंटा-घड़ियाल की ध्वनि हुई, जय ध्वनि हुई, श्रीजी की ध्वजा उठाई और पूज्य श्री के संरक्षण में चल पड़ा हजारों यात्रियों का समूह ।

आज कीर्तन में भी भाव की विलक्षण तीव्रता थी । प्रत्येक यात्री के मुख से उच्च स्वर में निकल रहा था – युगल नाम संकीर्तन ।

राधे कृष्ण राधे कृष्ण कृष्ण कृष्ण राधे राधे ।
राधे श्याम राधे श्याम श्याम श्याम राधे राधे ॥

मध्य-मध्य में श्री यमुना महारानी की जय ..... श्री यमुना महारानी की जय ..... जयघोष हो रहा था ।

यात्रियों के कदम बढ़ रहे थे यमुना जी की प्रवाह तीव्रता देखने को । जैसे ही निकट आये, हजारों यात्रियों को कृष्णावतार की घटना साकार हुई ।

मघोनि वर्षत्यसकृद् यमानुजा
गम्भीरतोयौघजवोर्मिफेनिला ।
भयानकावर्तशताकुला नदी मार्गं ददौ सिन्धुरिव श्रियः पतेः ॥ (श्रीभागवतजी १०/३/५०)

जल केवल ३ फिट ही रह गया था । यमुना जी ने मार्ग दिया इन ब्रजयात्रियों को पार होने का, हजारों यात्री सहज ही यमुना पार आ गये ।

श्री यमुना महारानी जू की जय !

श्री यमुना महारानी जू की जय !!

अब समझे सब यात्री ओह ! यही कारण था पूज्यश्री का प्रतिकूलता में भी आनन्दित होने का ।

तुमसौं कहा छिपी करुनामय, सबके अन्तरजामी ॥

(सूर-विनयपत्रिका -१९५)

'जब यात्रा श्रीराधारानी की तो यात्रियों के सुख-दुःख का ध्यान भी उन्हें !' इससे तो यही समझ में आता है – "भावना में यदि शुद्धि हो तो इष्ट-कृपा का अवश्य अनुभव होता है ।" प्रतिवर्ष तो क्या इन महान विभूति के निकट बैठकर देखो तो प्रतिदिन ही चमत्कार दिखाई देते हैं ।

२३/१०/२००८ में – हसनपुर में पुनः घटी घटना

इस बार भी यात्रियों को हुआ श्रीजी की कृपा का अनुभव । विपत्ति पर कृपा का यह क्रम हर बार ही देखने को मिलता है और मन श्रीसूरदास जी की पंक्तियों को गुनगुना उठता है – **मनसा करि सुमिरत हे जब जब, मिलते तब तब ही ।**

(सूरदासजी)

इस बार यात्रा में बड़ा विकट संकट आया, हजारों यात्री एक साथ डायरिया से ग्रस्त हो गये । यात्रा समिति के प्रबन्धकों द्वारा तुरन्त ही यात्रियों को हसनपुर, मथुरा, वृन्दावन अस्पतालों में पहुँचाया गया किन्तु उचित उपचार के बाद भी महामारी पर लगाम न लग सकी ।

२३/१०/२००८ को जब यात्रा हसनपुर पहुँची; संध्याकालीन सत्संग से पूर्व प्रबन्धक व समिति सदस्यों ने पूज्य बाबा श्री से प्रार्थना की – "इस बार यात्रा का यही विसर्जन कर दिया जाय तो उचित रहेगा अन्यथा यह अनियंत्रित महामारी जिस वेग से बढ़ रही है, ऐसा लगता है २-५ दिन में तो और भी उग्र रूप लेकर सबका काल बन जाएगी ।" कुछ क्षण मूक रहकर पूज्य बाबाश्री ने कहा – "क्या भगवन्नाम पर भरोसा नहीं है ? यात्रा में यह कोई प्रथम संकट तो आया नहीं और फिर जब-जब बाधायें आयीं, श्रीजी ने रक्षा की । सब लोग भगवन्नाम लो ।"

कुछ समय बाद संध्याकालीन सत्संग आरम्भ हुआ ।

आज अन्य कुछ गाने-कहने के पूर्व पूज्य बाबा श्री ने श्रीव्यास जी महाराज का एक विलक्षण पद गाया –

आधो नाम तारिहैं श्री राधा ।

रा के कहे रोग सब मिटिहैं, धा के कहे मिटै सब बाधा ॥
जुग अक्षर की महिमा को कहै, गावत वेद पुराण अगाधा ।
'अली किशोरी' नाम रटत नित, लागी रहत समाधा ॥

लगभग एक घण्टा यह पदगान हुआ, सम्पूर्ण वातावरण राधानाममय हो गया ।

बस फिर क्या था, अगले दिन ही सूचना प्राप्त हुई – "डायरिया नियन्त्रित हो गया है, यात्री स्वस्थ होकर अस्पताल से लौट रहे हैं ।"

यह साक्षात् श्रीराधारानी की कृपा का अनुभव हजारों यात्रियों ने किया । प्रतिवर्ष प्रतिकूल परिस्थितियाँ आती अवश्य हैं परन्तु श्रीराधारानी की यात्रा होने से वे सब विद्युतवत् चमक कर गायब हो जाती हैं ।

अद्भुत घटना घटी सुपाना में –

एकबार श्रीराधारानी ब्रजयात्रा 'सुपाना' ग्राम से होकर गुजर रही थी, उस समय एक भीषण दुर्घटना घटी । इस ब्रजयात्रा में २४ घंटे अखंड कीर्तन चलता रहता है । जब यात्रा प्रातःकाल अपने पड़ाव स्थल से अगले पड़ाव की ओर कूच करती है उस समय भी नाम कीर्तन होता रहता है । श्री बाबा महाराज का कहना है कि सतत् नाम कीर्तन से जुड़े रहने के कारण ही यात्रा सफल होती है इसीलिए उनकी प्रेरणा से पदयात्रा करते समय ठाकुरजी के डोले के पास जो भी भक्त कीर्तन करते रहते हैं,ध्वनि विस्तारक यंत्रों द्वारा ऐसी व्यवस्था बनायी जाती है कि ३-४ किमी की दूरी तक फैले समस्त यात्रियों को वह कीर्तन सुनाई देता रहता है, इसके लिए वायरलेस (तारविहीन) प्रणाली की व्यवस्था बनायी जाती है जिसमे एक ऐसे एंटीने का प्रबंध किया जाता है जो बिना तार के ही ३-४ किमी. तक कीर्तन ध्वनि का प्रसारण कर सके । उस यात्रा में जो नवयुवक भक्त ऐंटीने को लेकर चल रहा था,अनजाने में वह ऐंटीना सुपाना ग्राम में लगे एक बिजली के खम्बे से छू गया जिसमे ११ हजार वोल्ट का तीव्र करेन्ट प्रवाहित हो रहा था । इतनी अधिक तीव्र शक्ति के ऐंटीने का स्पर्श होने से जो भी साधक भक्त और साध्वियां माइक से कीर्तन कर रहे थे, उनके माइकों में भी यह भीषण करेन्ट प्रवाहित हुआ, जिसके प्रभाव से वे अचेत होकर गिर पड़े, लाउडस्पीकर लेकर चलने वाले भक्त भी मूर्छित होकर गिर पड़े । सबसे अधिक दुखद घटना यह घटी कि गुजरात का नवयुवक जो अत्यंत सेवा भाव से ऐंटीना लेकर चल रहा था, ११ हजार वाल्ट के करेन्ट के प्रहार से घटना स्थल पर ही उसका देहांत हो गया । रसमय नृत्य और गान के मध्य अचानक यह दुर्घटना घटी और एक – एक करके कीर्तन करने वाले भक्त गिरकर मूर्छित होते जा रहे थे । इससे थोड़ी देर को कीर्तन बाधित हो गया परन्तु ऐसी विकराल परिस्थिति में भी श्रीबाबा महाराज ने अन्य भक्तों को बुलाकर उनके द्वारा कीर्तन पुनः आरंभ करवा दिया । यह श्री राधामानबिहारीलाल की अदभुत कृपा का चमत्कार था कि ११ हजार वोल्ट बिजली के करेन्ट के भीषण आघात की चपेट में आए अन्य सभी भक्त कुछ दिन अस्पताल में उपचार के उपरान्त स्वस्थ हो गए और फिर से यात्रा में सम्मिलित हो गए । श्री बाबा महाराज की सेवा के प्रति अनन्य रूप से समर्पित और महान कीर्तनकार संत श्री ब्रजराज शरण जी भी इस भीषण करेन्ट के आघात से मूर्छित हो गए थे परन्तु अचेतनावस्था में भी वह अपने गुरुदेव श्री बाबा महाराज का स्मरण करते हुए 'बाबा-बाबा' कह रहे थे । कुछ दिन अस्पताल में चिकित्सा कराने के पश्चात् वह पुनः ब्रजयात्रा में आ गए और पैदल चलने में असमर्थ होने के कारण उन्होंने वाहन में बैठकर पुनः कीर्तन करना आरंम्भ कर दिया । इसी प्रकार महाराष्ट्र के एक भक्त मोहनजी जो प्रति वर्ष इस ब्रजयात्रा में कीर्तन का लाउड स्पीकर उठाकर सबसे आगे चलते थे, करेन्ट लगने पर मूर्छित होने पर जब उन्हें अस्पताल पहुँचाया गया तो होश आने पर उन्हें बहुत दुःख हुआ कि मेरी सेवा छूट गयी । वह डॉक्टरों के मना करने पर भी अपना उपचार पूरा कराये बिना ही राधारानी ब्रजयात्रा में दौड़े चले आए और अगले दिन की यात्रा में लाउड स्पीकर लेकर तैयार हो गए, उनकी ऐसी अद्भुत सेवा भावना देखकर श्री बाबा महाराज ने गुलाब की पुष्पमाला उनके गले में पहना दी । इस प्रकार यह बहुत बड़ा चमत्कार हुआ कि इतने घातक करेन्ट के प्रहार से जर्जरित हुए कई भक्त फिर से ठीक होकर यात्रा में सम्मिलित होकर नाम कीर्तन में तन्मयता के साथ आ जुटे ।

निष्किञ्चन ब्रजयात्रियों की भावना-शक्ति का चमत्कार

सन् २०११ की यात्रा में श्री बाबा महाराज के हृदय का वाल्व फट गया था, प्राणघातक स्थिति हो गयी थी । उनके मुख से रक्त प्रवाहित होने लगा । ऐसी स्थिति में उन्हें तुरन्त अस्पताल ले जाया गया । भारत वर्ष के प्रसिद्ध डॉक्टरों ने श्री बाबा का चिकित्सकीय परीक्षण किया और वे उनकी हालत देखकर स्तब्ध रह गये । डॉक्टरों ने कहा कि श्री बाबा का तुरन्त ही ऑपरेशन करना होगा परन्तु इसमें बहुत बड़ा खतरा यह है कि ऑपरेशन के बाद श्री बाबा को ब्रेन हैमरेज हो सकता है, लकवा हो सकता है,नेत्रहीन होने का खतरा है अथवा बाबा श्री कोमा में जा सकते हैं । ऑपरेशन से पूर्व कोई हादसा होने की स्थिति में डॉक्टरों ने एक मेडिकल पेपर पर लिखित रूप से ऑपरेशन की सहमति हेतु हस्ताक्षर करने को कहा । श्री बाबा महाराज के अनन्य सेवक संत श्री ब्रजराज शरण जी ने मेडिकल पेपर पर हस्ताक्षर करके ऑपरेशन करने की स्वीकृति प्रदान कर दी । ६ घंटे तक श्री बाबा का अत्यन्त जटिल ऑपरेशन हुआ किन्तु डॉक्टर यह देखकर अत्यधिक आश्चर्यचकित थे कि उन्होंने ऑपरेशन पूर्व शारीरिक आघातों की जो आशंका की थी, उनमें से एक भी दुर्घटना नहीं घटी । डॉक्टरों के लिए भी यह एक अकल्पनीय चमत्कार था, उन्होंने अपने जीवन में किसी मरीज के साथ ऐसी अभूतपूर्व घटना पहले कभी नहीं देखी थी । इसीलिए उन्होंने श्रीबाबामहाराज का नामकरण कर दिया – miracle बाबा (चमत्कारी या जादूगर बाबा) । श्रीबाबा के स्वास्थ्य के साथ यह चमत्कारिक घटना इसलिए घटी क्योंकि उन्होंने धर्म को कभी भी व्यवसाय नहीं बनाया । इसी तरह ब्रजयात्रा को भी उन्होंने कभी व्यवसाय नहीं बनने दिया । आजकल ब्रज यात्राओं का सञ्चालन करना भी एक बहुत बड़ा व्यवसाय बन गया है । अनेकों संस्थाएं और संप्रदाय ब्रज यात्रा कराने के लिए यात्रियों से मोटी रकम वसूल करते हैं, इस कारण निर्धन यात्री ब्रजयात्रा का लाभ नहीं उठा पाते हैं । इसीलिए श्री बाबा ने निःशुल्क यात्रा का सूत्रपात किया ताकि निर्धन यात्री भी ब्रज परिक्रमा का लाभ उठा सकें । श्रीबाबा महाराज की इस निष्काम सेवा का ही यह चमत्कार था कि प्राणघातक बीमारी भी उन्हें कोई हानि नहीं पहुँचा सकी और चमत्कारिक रूप से वह पूर्ण स्वस्थ हो गए । जिन निर्धन यात्रियों की सेवा हेतु श्री बाबा ने निःशुल्क यात्रा का शुभारम्भ किया, उनकी बीमारी के समय वे करुण क्रंदन के साथ श्री राधारानी से शीघ्र ही श्री बाबा महाराज के पूर्ण स्वस्थ होने की प्रार्थना किया करते थे । उनकी प्रार्थना श्रीजी ने सुनी और अविश्वसनीय ढंग से उन्हें घातक रोग से मुक्त किया ।

यात्रा से ही गौशाला की निरन्तर संवृद्धि

मान मंदिर द्वारा संचालित माताजी गौशाला की स्थापना भी श्री राधारानी ब्रजयात्रा का चमत्कार है क्योंकि प्रति वर्ष यात्रा के बरसाना पड़ाव स्थल पर श्री बाबा महाराज ब्रजाचार्य श्री नारायण भट्ट जी की पुस्तक ब्रजभक्तिविलास से ब्रज की लीला स्थलियों का जो प्रणाम मन्त्र बुलवाते हैं उसमे श्री बरसाना धाम को भी प्रणाम करने का मन्त्र बुलवाया करते थे, जो इस प्रकार है –

महीभानसुतायैव कीर्तिदायै नमो नमः ।
सर्वदा गोकुले वृद्धिं प्रयच्छ मम कांङ्क्षितां ॥

वृषभानुजी व कीर्ति मैया को नमस्कार है । गौओं के कुल (गौवंश) वृद्धि की मेरी आकांक्षा को आप पूर्ण करें ।

बरसाना के इस प्रणाम मन्त्र में श्री राधारानी के माता-पिता श्री कीर्ति मैया और श्री वृषभानु बाबा से गौओं के समुदाय की वृद्धि होने की प्रार्थना की गयी है ।श्री बाबा महाराज प्रति वर्ष इस प्रार्थना मन्त्र को बरसाना के पड़ाव स्थल पर यात्रियों से उच्चारण करवाया करते थे । इस प्रार्थना मन्त्र के उच्चारण करवाने का यह चमत्कार हुआ कि श्रीजी की कृपा से माताजी गौशाला की स्थापना हुई और उसमे आज ४५ हजार से अधिक गौओं की मातृवत सेवा हो रही है और गौवंश की संख्या भी उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त हो रही है ।

आज से ७० वर्ष पूर्व ब्रजयात्राओं में ३०-३० हजार यात्री गण चलते थे, जिससे कुओं का पानी सूख जाया करता था ।आज सांप्रदायिक वैमनस्य के कारण इन यात्राओं के संचालकों में फूट पड़ गयी और अब थोड़ी संख्या में ही यात्री ब्रज परिक्रमा कर पाते हैं, इसके अतिरिक्त वर्तमान युग में पद यात्रायें भी पूर्णतया समाप्त हो गयी हैं, अब तो केवल वाहन यात्रायें रह गयी हैं ।अत्यधिक शुल्क लेकर

वाहनों में बिठाकर ब्रज के गिने-चुने प्रमुख लीला स्थलियों का दर्शन करा दिया जाता है ।काफी समय से एक प्रमुख संप्रदाय की यात्रा अपने अनुपम वैभव और विशाल संख्या के साथ ब्रज परिक्रमा किया करती थी ।सन् २०१७ में तो वह यात्रा भी बहुत छोटी रह गयी । इस प्रकार कई अन्य महत्वपूर्ण आचार्यों-महापुरुषों के स्थानों से चलने वाली यात्राओं पर भी अब विराम लग गया है परन्तु श्रीजी की अहैतुकी कृपा से सन् १९८८ से केवल २५० यात्रियों के साथ प्रारंभ हुई श्री राधारानी ब्रजयात्रा प्रति वर्ष अदम्य उत्साह के साथ ब्रज परिक्रमा करती आ रही है, अनेकों बाधाओं, अनेकों समस्याओं तथा धन का अभाव होने पर भी कभी भी यह बंद नहीं हुई । यहाँ तक कि सन् २०११ में यात्रा के दसवें ही दिन प्राणघातक बीमारी के कारण श्री बाबा महाराज की अनुस्पथिति में भी यह यात्रा पूर्ण सफलता के साथ संपन्न हुई ।वर्तमान काल में ब्रज में यही एकमात्र पदयात्रा है जो सुचारू रूप से ४० दिन तक ब्रज के दुर्गम स्थानों का यात्रियों को निःशुल्क रूप से दर्शन कराती है और इसमें सम्मिलित होने वाले यात्रियों की संख्या भी प्रति वर्ष वृद्धि को प्राप्त होती जा रही है ।यह भी श्रीजी की कृपा का एक विलक्षण चमत्कार है ।

श्री राधारानी ब्रजयात्रा में पिछले ३ वर्षों से जो लोग आर्थिक सहायता किया करते थे, किन्ही कारणों से आर्थिक सहयोग करने में वे असफल हो गए,इसके साथ ही ३ वर्षों में कुछ लोगों ने इस यात्रा का बहुत अधिक विरोध किया परन्तु यह एक अद्भुत चमत्कार है कि आर्थिक सहयोग बंद हो जाने और भारी विरोध के बावजूद भी इस पर न तो कोई रोक लगी और न इसकी व्यवस्था और सञ्चालन में कोई त्रुटि हुई अपितु बाहरी आर्थिक सहायताओं के बंद होने और विरोधों के बावजूद भी यह यात्रा पूर्व की अपेक्षा और अधिक कुशलता के साथ संचालित हो रही है । यात्रियों की संख्या में भी कमी आने के बजाय उनकी संख्या भी उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त होती जा रही है । श्री बाबा महाराज इसका यही कारण बताते हैं कि भगवान् के आश्रय और उनके विश्वास के साथ जो कार्य किया जाता है उसमें कोई बाधा और असफलता अवरोध उत्पन्न नहीं कर सकती, इसके विपरीत मनुष्यों के सहयोग और उनके आश्रय पर निर्भर होकर जो कार्य किया जाता है, उसमें असफलता और बाधाओं का आना अवश्यम्भावी है । श्रीराधारानी ब्रजयात्रा केवल श्रीजी के आश्रय और उन्ही के प्रति सुदृढ़ विश्वास के साथ परिसंचालित की जाती है इसीलिए आज भी आर्थिक सहयोग और भारी विरोध के बावजूद भी यह उन्नति के पथ पर सतत् अग्रसर है ।

.....

सच्चा साधन तो मन से होता है, ये बात सभी संत-महापुरुषों ने कही है, कृष्णदास कविराज भी कहते हैं – **बाह्य अन्तर इहार दुई तो साधन, बाह्य देहे करे श्रवण-कीर्तन, आन्तर करे निज भावन ॥**

अर्थात् साधन के दो पक्ष बताये गये हैं - बाह्य और भीतर । नाम-संकीर्तन, जप आदि बाहर का साधन है, भीतर तुम्हारी जो भावनाएँ हैं, वह आन्तरिक साधन होता है; इस पर विचार करना चाहिए कि हमारे मन की दौड़ा-दौड़ी किधर हो रही है, इतने साल हो गए माला फेरते-फेरते परन्तु चित्तवृत्तियों का प्रवाह किधर है ? इसीलिए इस बात को कड़े शब्दों में सावधान करते हुए कबीरदासजी ने कहा है - **माला फेरत जुग भया, गया न मन का फेर । कर का मनका डार दे, मन का मनका फेर ॥**

इसका यह मतलब नहीं है कि जप आदि का खण्डन किया जा रहा है, इसका मतलब यह है कि जैसा शास्त्र वचन है- **'तदुजपस्तदर्थभावनम्'** - तुम्हारा मन कृष्ण को छू रहा है कि नहीं ? क्योंकि साधन तो मन से होता है ।

अहो विधना तोपै अँचरा पसारि माँगौ,

जनम जनम दीजै मोहि याही ब्रज बसिबो ।

याही माने यही ब्रज जो दिखायी पड़ रहा है, ब्रज का दिव्य रूप तो दिखायी नहीं पड़ रहा है । प्राकृत रूप ही दिखायी पड़ रहा है । इसमें शंका नहीं करो, यही धाम तुमको वहाँ पहुँचायेगा । हे दीनबन्धु, हे गोपाल ! इसी ब्रज में हमें जन्म मिल जाये ।

श्रीब्रजाराध्या 'राधिका'

श्रीबाबामहाराज के सत्संग 'धाम-महिमा' (२७/७/२००६) से संकलित

ब्रजधाम की सेवा साक्षात् श्रीकृष्ण करते हैं और ब्रज में ही उन्होंने संसार में दिखाई देने वाले पञ्चतत्त्व का भी शोधन किया । बचपन में ही माटी खाकर उन्होंने ब्रज के भूमितत्त्व का शोधन किया, कालियनाग को नाथकर जल-तत्त्व का शोधन किया, इसके बाद् दावानल का पान कर अग्नितत्त्व का शोधन किया, तृणावर्त को मारकर वायु-तत्त्व का शोधन किया और व्योमासुर को मारकर आकाशतत्त्व का शोधन किया । श्रीराधारानी ने तो श्रीकृष्ण से भी अधिक कार्य ब्रज में किया । श्रीकृष्ण ने ब्रजरज के प्रति जो निष्ठा दिखाई, श्रीराधारानी ने उससे कई गुना अधिक अपनी प्रीति इस धाम के प्रति प्रकट की । इसलिए श्रीजी के जितने भी अनन्य उपासक थे, वे उसी पद्धति पर चले, जिस पर श्रीराधारानी चलीं, जिस पर श्रीकृष्ण प्रकट लीला में नहीं चल सके । श्यामसुंदर तो ब्रज से मथुरा गये फिर द्वारिका चले गये किन्तु श्रीजी ब्रज के बाहर नहीं गयीं और उनके साथ जितनी भी सखियाँ थीं, वे भी नहीं गयीं, ये श्रीजी की अनन्य ब्रजनिष्ठा का सबसे बड़ा प्रमाण है । एकबार श्रीजी से कुछ लोगों ने प्रस्ताव किया था कि आप द्वारिका चलिए, आपके प्यारे तो वहाँ हैं । जो राय (सलाह) देने वाले होते हैं, वे कुछ न कुछ प्रेम रखते हैं । श्रीजी की करुणविरहलीला को देखकर उन लोगों ने श्रीजी से द्वारिका चलने का अनुरोध किया था । श्रीजी ने बड़ा सुंदर और मीठा उत्तर दिया – अरे पथिक ! तू मुझसे द्वारिका चलने को कहता है, कृष्ण से मिलने को कहता है । **"हौं कैसे के दरसन् पाऊँ ।"** मुझे उनका दर्शन कैसे हो सकता है ? **"सुनो पथिक उई देस द्वारका, जो तुम्हरे संग जाऊँ ।"** किसी पथिक ने श्रीजी से कहा कि मैं आपके साथ द्वारका चलूँगा, आपको कोई कष्ट नहीं होने दूँगा । श्रीजी ने कहा कि यदि मैं तुम्हारे साथ जाती भी हूँ तो क्या तुमको पता है कि द्वारिका कैसी है ? **"बाहर भीर बहुत भूपन की, बूझत बदन दुराऊँ ।"** हम ब्रजवासी हैं, हमारी अपनी ब्रज की संस्कृति है, ब्रज का पहनावा है । (श्रीबाबामहाराज इस प्रसंगवश कहते हैं कि इसीलिए मैं मानमन्दिर में रहने वाली साध्वियों को ब्रज की वेशभूषा लहंगा-फरिया आदि पहनने को कहता हूँ, इसमें गौरव समझना चाहिए क्योंकि श्रीजी यही चाहती हैं, आजकल के आधुनिक परिधान श्रीजी को पसंद नहीं हैं) आगे श्रीजी कहती हैं कि वहाँ बाहर जो राजाओं की भीड़ है, वे हम गोपियों की रहन-सहन को देखकर दौड़ेंगे और सोचेंगे कि ये लोग कहाँ से आयी हैं, ये कौन हैं ? उस समय हम लोग उन्हें क्या उत्तर देंगी और यदि हम लोग भीतर भी पहुँच जाएँगी तो **"भीतर भीर भोग भामिनी की"** भीतर महल में उनकी १६,१०८ भामिनियाँ हैं **"तेई ठाक आइ पठाऊँ ।"** उस भीड़ में अपनी किस सखी को मैं भेजूँगी, तुम्हीं बताओ । यदि तुम कहते हो कि नहीं, मैं सब प्रबंध कर दूँगा – **"बुधि बल जुक्ति जतन करि, उहि पुर हरि पिय पै पहुचाऊँ ।"** यदि कोई ऐसा भी संदेश वहाँ पहुँचा दे तो **"अब बन बसि निसि कुञ्ज रसिक बिन कौने दसा सुनाऊँ ।"** वे वृन्दावन की कुंजें, वे वन, वह आनंद, वहाँ मैं उसका कैसे वर्णन कर पाऊँगी और यदि तुम सब प्रबंध कर लेते हो तब भी एक बात सुनो, वह काम तुम नहीं कर सकोगे, उसे श्यामसुंदर भी नहीं कर पाएँगे । पथिक बोला कि ऐसी कौन-सी बात है जिसे वे नहीं कर पाएँगे । तब राधारानी बोलीं – **"श्रम कै सूर जाऊँ प्रभु पासहि"** यदि मैं वहाँ पहुँच भी जाऊँगी – **"मन में भले मनाऊँ ।"** ठीक है मन में तुम्हारा भला ही मनाऊँगी ।

"नव किशोर मुख मुरलि बिना, इन नैनन कहा दिखाऊँ ।" इन आँखों से क्या मैं द्वारकाधीश को देखूँगी ? इन आँखों से मैं द्वारकाधीश का दर्शन नहीं कर सकती । दूसरा प्रमाण है रूप गोस्वामीजी के ग्रन्थ उज्ज्वल नीलमणि का । उसमें उन्होंने बहुत सुन्दर प्रसंग लिखा है । एकबार श्रीकृष्ण रास से अंतर्धान हो गये तो ब्रजगोपिकाएँ उन्हें वन-वनान्तर में ढूँढने लगीं । उस समय श्रीकृष्ण गोपियों से कौतुक करने के लिए एक कुञ्ज में अपना चतुर्भुज रूप बनाकर बैठ गये । गोपियाँ हर लता कुञ्ज में कृष्ण का अन्वेषण करती हुई जा रही थीं तो उस कुञ्ज में चतुर्भुज रूप धारी श्रीकृष्ण को देखकर वे रुकी नहीं क्योंकि उनका प्रेम तो श्रीकृष्ण के द्विभुज रूप से था । यह बात ब्रज के सभी रसिकों ने लिखी

है कि गोपियाँ इस बात को बार-बार कहती हैं कि हमारा प्यार तो केवल दो भुजा वाले कृष्ण से है –

हमारो मुरली वारो श्याम ।
बिन मुरली बनमाल चन्द्रिका, नहिं पहचानत नाम ॥

हमारे कृष्ण कहाँ रहते हैं –

नन्दीश्वर गोवर्धन गोकुल, बरसानो विश्राम ।

हम लोग बरसाने में रहती हैं जहाँ नित्य ही रस बरसता है, वहाँ ही विश्राम है ।

"नागरिदास द्वारिका मथुरा, इनसो कैसो काम ॥ "

वही बात सूरदासजी लिखते हैं कि राधारानी पथिक से कहती हैं कि यदि तुम हमें द्वारिकाधीश को दिखा भी दोगे तो क्या हमें उनका वह दर्शन मिल जाएगा –

"नव किशोर मुख मुरलि बिना, इन नैनन कहा दिखाऊँ ।"

हमारी आँखें तो नंदनंदन के गोपवेश के मुरलीधारी रूप के दर्शन की प्यासी हैं । हम द्वारिका में कृष्ण के चक्रधारी रूप को कैसे देखेंगी और उस रूप में हमारा प्रेम सम्भव ही नहीं है । इसलिए न हम द्वारिका जा सकती हैं और न ही मथुरा जा सकती हैं, हम लोग तो ब्रज की अनन्य उपासिकाएँ हैं । यही बात गोपियों ने उद्धवजी से कहा था – हे उद्धव ! तुम इस बात को समझ लो कि हम लोग ब्रजवासी हैं, हम लोग ब्रज को छोड़कर अन्यत्र नहीं जाते हैं । **"गोकुल सबै गोपाल उपासी ।"** गोपियाँ बोलीं – उद्धव ! ब्रजवासी ब्रज के बाहर नहीं जाते हैं । गोपाल का उपासक तो ब्रज में ही रहता है, बाहर के धक्के नहीं खाता है । तुम जो हमें योग आदि साधन करने को कहते हो, यह साधन करने वाले तो हिमालय और काशी आदि अन्य तीर्थों में रहते हैं ।

"जे गाहक साधन के ऊधौ, ते सब बसत ईशपुर काशी ।"

इस तरह गोपियों की ब्रजनिष्ठा के सैकड़ों पद हैं । इसलिए इस ब्रजरज की सच्ची उपासिका श्रीराधारानी हैं । रामावतार और कृष्णावतार में यही अंतर है । रामावतार में राम अयोध्या में रहे और सीताजी अंतिम समय में वाल्मीकिजी के आश्रम में रहीं, लोकनिंदा के भय से उनका त्याग कर दिया गया । इसीलिए आज भी जो आनंद वृन्दावन में है, वह अयोध्या में नहीं है । आप स्वयं अयोध्या और वृन्दावन जाकर देख सकते हैं । जहाँ से श्रीजी चली जाती हैं, वहाँ अकेले भगवान् क्या करेंगे क्योंकि रसरूपा तो केवल श्रीजी ही हैं ।

"शूकर ह्वै कब रास रचायो,
बामन ह्वै कब गोपी नचाई ।"

कृष्णावतार के अतिरिक्त किस अवतार में रस बरसा, किसी अवतार में रस नहीं बरसा ।

मीन भये कौन के चीर हरे,
कच्छप भये कब बंसी बजाई ।
ह्वै नृसिंह कहो हरि जू तुम,
कौन की छतियन रेख लगाई ।
राधे जू प्रगट भई जब ते,
तब ते तुम केलि कला निधि पाई ।

प्रकट लीला में श्रीकृष्ण ब्रज के बाहर चले गए तो कोई बात नहीं किन्तु श्रीजी ब्रज में विराज रही हैं तो आज तक ब्रज में ऐसा रस है जो कि किसी धाम में नहीं है ।

इसका एक और प्रमाण है भागवत उत्तर माहात्म्य में, वहाँ प्रसंग आता है कि श्रीकृष्ण के नित्यधाम गमन के बाद द्वारिका की रानियाँ वृन्दावन में आयीं । उस समय परीक्षित जी वज्रनाभ सहित रानियों को साथ लेकर यहाँ आये । रानियों ने देखा कि वृन्दावन में यमुनाजी आनन्द के साथ पहले की तरह बह रही हैं । उन्होंने यमुनाजी के आधिदैविक रूप को देखा केवल जल को नहीं देखा क्योंकि जल तो बात नहीं करता है । रानियों ने यमुनाजी से पूछा – हे यमुने ! श्रीकृष्ण तो अंतर्धान हो गए किन्तु तुम्हारे मन में कोई उदासी नहीं है, इसका क्या कारण है ? यमुना जी बोलीं – तुमको पता नहीं, मैं श्रीराधारानी की दासी हूँ और जहाँ राधारानी हैं वहाँ श्रीकृष्ण के साथ विरह का केवल नाटक चलता है । वस्तुतः विरह तो मुझे स्पर्श भी नहीं कर सकता । यमुनाजी ने श्लोक बोला था – (भागवत, उत्तरमाहात्म्य – २/११) श्रीकृष्ण के ब्रज के बाहर जाने के बाद भी श्रीजी ब्रज में ही रहीं । इसलिए श्रीकृष्ण से सौ गुना नहीं, हजार गुना नहीं, लाख गुना काम श्रीजी ने कर दिखाया । इसलिए वे वृन्दावनेश्वरी बोलीं गयीं । इसका दूसरा प्रमाण है कि कुरुक्षेत्र में ब्रजवासियों का श्रीकृष्ण के साथ जो मिलन हुआ उसके बारे में आचार्यों ने अलग ही अर्थ किया है क्योंकि श्रीमद्भागवत को ये आचार्य लोग जैसा

समझ सकते हैं वैसा हम लोग नहीं समझ सकते । उन्होंने लिखा है कि ब्रजवासी कुरुक्षेत्र गए अवश्य और उनका श्रीकृष्ण के साथ मिलन भी हुआ लेकिन श्रीजी ने कहा - ये वही कृष्ण हैं और मैं वही राधा हूँ किन्तु उनके मिलन में वह आनन्द नहीं आया जैसा कि तब आता था जब वृन्दावन की कुंजों में वंशी बजती थी । इसी बात को भागवत में आचार्यों ने लिखा है कि श्रीकृष्ण ने गोपियों से सिद्धांत की बात कही कि हममें और तुममें कुछ अंतर नहीं है, हमारा-तुम्हारा कोई वियोग नहीं है, मैं तो सदा तुम्हारे पास में ही हूँ । जब श्रीकृष्ण ने बहुत अधिक उपदेश दिया तो गोपियों ने केवल एक ही श्लोक में उसका उत्तर दे दिया । जो गूढ़ भाव है वह तो व्यंजनावृत्ति से ही भावार्थ स्पष्ट होता है । शब्दार्थ अभिधावृत्ति से आता है, लक्षणावृत्ति से लक्ष्यार्थ आता है तथा व्यंजनावृत्ति से भावार्थ आता है, ऐसा क्यों ? इसका कारण ये है कि जहाँ शब्दार्थ नहीं घटता है तो वहाँ लक्षणा से उसका अर्थ घटाया जाता है । जैसे कोई आदमी साइकिल पर जा रहा है और किसी ने कहा – ओ साइकिल । अब यहाँ साइकिल कोई आदमी तो नहीं है किन्तु लक्षणावृत्ति से अर्थ घटाना पड़ा कि साइकिल माने साइकिल वाला । वहाँ शब्दार्थ फ़ेल हो गया और जहाँ पर लक्षणा भी फ़ेल हो जाती है, वहाँ व्यंजना काम देती है । उपरोक्त श्लोक का शब्दार्थ पहले समझ लीजिए जबकि यहाँ शब्दार्थ फ़ेल हो गया है । अधिकतर लोगों ने इस श्लोक का शब्दार्थ ही लगाया है, वह ठीक नहीं है । पहले तो श्रीकृष्ण ने गोपियों को उपदेश दिया कि जो तुम हो वही मैं हूँ, हमारा-तुम्हारा वास्तव में कोई वियोग नहीं है । जबकि देखा जाये तो प्रेमियों के लिए ये बेमतलब की बातें हैं और श्यामसुन्दर की आदत है कि ऐसी बातें किया करते हैं, ऐसा नहीं कि केवल ये यहीं की बात है । रास के आरंभ में भी इन टेढ़ी टांग के ठाकुर ने गोपियों के सामने बड़ी तिकड़मबाजी लगाई और कहा कि तुम लोग अपने घर चली जाओ और अपने पतियों तथा उसके परिवार वालों की सेवा करो । यही स्त्रियों का धर्म है । सती साध्वी स्त्रियाँ तो रात के समय परपुरुष से मिलने के लिए बाहर नहीं जाती हैं । इस प्रकार उन्होंने वहाँ भी गोपियों से छल की बातें की थीं किन्तु गोपियों ने प्रणयगीत में उसका ऐसा उत्तर दिया कि श्यामसुंदर चुप हो गये, उनकी वाणी बंद हो गयी और फिर सीधे-सीधे गोपियों के नचाये नाचने लगे । सिद्धांत की बातें बताना, स्त्रीधर्म सिखाना फिर भूल गये, वे समझ गये कि गोपियों के सामने हमारी कुछ चलने वाली नहीं है । इसी प्रकार यहाँ कुरुक्षेत्र में भी गोपियों के सामने उन्होंने भाषण दिया, यह उनकी पुरानी आदत है । उनकी बात सुनकर गोपियाँ बोलीं –

आहुश्च ते नलिननाभ पदारविन्दं योगेश्वरैर्हृदि विचिन्त्यमगाधबोधैः । संसारकूपपतितोत्तररणावलम्बं गेहञ्जुषामपि मनस्युदियात् सदा नः ॥

(श्रीमद्भागवतजी १०/८२/४९)

हे नलिननाभ ! हे कमल के समान नाभि वाले ! आपका जो चरणकमल है, अगाधबोध वाले योगेश्वर अपने हृदय में उसका चिन्तन करते हैं, कैसे चरण हैं, जो संसार के कुयें में गिरे हुए लोगों के लिए अवलंब हैं ।

ठीक है, यहाँ तक तो बात घट जाती है । इसके आगे गोपियाँ कहती हैं – **"गेहञ्जुषामपि मनस्युदियात् सदा नः"** श्यामसुंदर तो गोपियों को बहुत बड़ा सिद्धांत बता गये किन्तु वे बोलीं कि हम तो गेह में रहने वाली हैं अर्थात् अपने घर को नहीं छोड़ सकती हैं । हमारे हृदय में भी आपके श्रीचरणों का उदय हो । अब उन्होंने जो यह कहा – 'गेहञ्जुषाम्' अर्थात् हम तो घर में रहने वाली हैं । यह साधारण अर्थ लगता है । 'गेहञ्जुषाम्' क्यों कहा उन्होंने ? गोपियाँ गृहस्थ तो थीं नहीं । श्रीजी की अष्टसखियाँ थीं, उनके कोई संतान नहीं थी, ब्रजगोपियों की कोई संतान नहीं थी, श्रीजी की कोई संतान नहीं थी, अतः वे गृहस्थी कहाँ थीं, जो नाममात्र की परकीया भाव की गोपियाँ थीं, उनके बारे में भी शास्त्र में लिखा है कि उनका अपने पतियों से अंग-संग नहीं हुआ था, केवल भाव था, वस्तुतः तो उनका सब कुछ श्रीकृष्ण के ही लिए था । अतः उनके लिए 'गेहञ्जुषाम्' अर्थात् वे गृहस्थ थीं, यह अर्थ कैसे बैठेगा, नहीं बैठता है, इसका वास्तविक अर्थ आचार्यों ने बताया है कि गोपियों का घर क्या है ? ब्रजवासियों के घर का तो श्रीकृष्ण ने ही गिरिराज-पूजन के समय नन्दबाबा के सामने खंडन कर दिया है ।

न नः पुरो..... । (श्रीमद्भागवतजी १०/२४/२४)

श्रीकृष्ण बोले - हम ब्रजवासियों का तो कोई घर ही नहीं है । इसलिए गोपियों ने श्रीकृष्ण से कुरुक्षेत्र में जो यह कहा कि हम घरों में रहने वाली हैं तो इस 'घर' शब्द का यहाँ क्या अर्थ हुआ ? आचार्यों ने 'घर' शब्द का अर्थ बताया – **"कानन श्रीराधा को घर है ।"**

गोपियों द्वारा प्रयुक्त श्लोक में 'घर' शब्द का तात्पर्य 'वृन्दावन' से है ।

"वृन्दाटवी नव निकुंज गृहाधिदेव्याः ।"

(श्रीराधासुधानिधि – ३०)

निकुंज ही राधारानी के घर हैं, ईंट-पत्थर के बने हुए मकान उनके घर नहीं हैं । अतः इस तरह गोपियों ने कहा कि हम बृज-वृन्दावन धाम को नहीं छोड़ सकती हैं । हम तो उसी धाम में रहने वाली हैं और वहीं रहेंगी, वहीं हमें आपके चरण हृदय में प्राप्त हो जाएँ अर्थात् आपके उसी गोपरूप की हमें प्राप्ति हो जाए । यह श्लोक (१०/८२/४९) की उस कड़ी का अर्थ है, यह अर्थ आचार्यों ने लिखा है । गोपियों ने श्रीकृष्ण से कहा कि ठीक है, तुम्हारा चरण संसारियों के लिए अवलंबरूप तो है ही । इसे तो गोपियों ने पहले भी कई बार कहा था । गोपीगीत में उन्होंने कहा – **"प्रणतदेहिनां पापकर्शनम् ।"** लेकिन पापकर्शनं कहने का मतलब यह नहीं है कि गोपियों के पास पाप है । उनके पास पाप कहाँ से हो सकता है ? गोपियाँ कहती हैं – हे कृष्ण ! तुम्हारे चरणों की यह विचित्र विशेषता है कि जो इनकी शरण में आता है, उसके पापों को तुम खींच लेते हो किन्तु इसका मतलब यह नहीं है कि ब्रज में पाप हो रहा है, अतः तुम हमारे भी पापों को खींच लो । गोपियों ने श्रीकृष्ण से कहा कि ठीक है, आपके चरणकमल संसार कूप में गिरे हुए लोगों के लिए अवलंब हैं किन्तु हम तो धाम की निवासिनी हैं । इस श्लोक का यथार्थ अर्थ यह हुआ । इस प्रकार प्रकट लीला में ब्रज के प्रति जो निष्ठा श्रीजी ने दिखाई, श्यामसुंदर तो वह दिखा ही नहीं सके, वे तो भगोड़े थे, ब्रज से ही भाग गये । धाम में जमकर रहने वाली श्रीजी हैं । यह उनके द्वारा ब्रजरज के प्रति निष्ठा द्वारा पृथ्वीतत्त्व का भी शोधन हो गया । कालियनाग को नाथ कर श्रीकृष्ण ने जलतत्त्व का शोधन किया था, उससे बहुत अधिक आगे का कार्य श्रीजी ने किया, इसका भी प्रमाण सुनिये - अरिष्टासुर ब्रज का नाश करने के लिए आया था, वह बैल का रूप बनाकर आया था, श्रीकृष्ण ने उसका वध कर दिया । जब श्रीकृष्ण रात को रास में आये तो सब गोपियों ने कहा कि इन्हें मत छुओ । इस प्रकार सभी गोपियों ने श्रीकृष्ण का बहिष्कार कर दिया । श्यामसुंदर रास में नाचने-कूदने के लिए बहुत बनठन कर आये थे किन्तु सब गोपियों ने उनका स्पर्श करने से ही मना कर दिया । श्यामसुंदर ने पूछा कि तुम लोग ऐसा क्यों करती हो तो गोपिकाओं ने कहा कि तुमने गो हत्या की है । गोविन्द ने पूछा कि मैंने गो हत्या कहाँ की है तो गोपियों ने कहा कि तुमने अरिष्टासुर का वध किया जबकि वह बैल बनकर आया था । श्रीकृष्ण बोले कि वह तो असुर था इसलिए मैंने उसको मारा, तुम लोगों की रक्षा की, सारे ब्रज की मैंने रक्षा की । गोपियाँ बोलीं कि कुछ भी हो, उसका रूप तो बैल का ही था और तुमने उसका वध कर दिया इसलिए हम लोग तुम्हारा स्पर्श नहीं करेंगी । ऐसी गोभक्ति ब्रज गोपियों और श्रीजी में थी । उन सभी ने श्रीकृष्ण को बहिष्कृत कर दिया । वे बोले कि अब मुझे क्या करना चाहिए, आप लोग मुझे कैसे अपनायेंगी ? गोपियों ने कहा कि उस हत्या का प्रायश्चित करो, तब तुम हमारे पास आ सकते हो, हमारा स्पर्श कर सकते हो नहीं तो तुम हमें छू भी नहीं सकते हो । इसके लिए सबसे पहले तुम पृथ्वी के समस्त तीर्थों में जाकर स्नान करके आओ । श्यामसुंदर बोले – देखो जी, मैं तो समस्त तीर्थों में स्नान कर भी आऊँगा लेकिन तुम लोग मेरे ऊपर विश्वास नहीं करोगी, कह दोगी कि नन्द का लाला झूठे ही हमें बहका रहा है । इसलिए मैं यहीं सब तीर्थों को बुलाता हूँ और तुम्हारे सामने संसार के सारे तीर्थ आएंगे और फिर मैं उस तीर्थ जल में स्नान करूँगा, जिससे तुमको विश्वास हो जाये । इसके बाद श्रीकृष्ण ने पृथ्वी के सारे तीर्थों का आवाहन किया और सारे तीर्थ कृष्ण कुण्ड में आ गये और कहने लगे कि मैं काशी हूँ, कोई कहता कि मैं प्रयाग हूँ, मैं नैमिषारण्य हूँ, इस प्रकार अपना-अपना परिचय देकर समस्त तीर्थ कृष्णकुण्ड में आने लगे । अब श्रीकृष्ण ने कृष्ण कुण्ड में गोता लगाया और गोपियों से कहा कि अब तुमको विश्वास हुआ कि मैं पवित्र हो गया हूँ । गोपियाँ बोलीं – हाँ, अब तुम पवित्र हो गये हो । श्रीकृष्ण ने गोपियों से कहा कि अब

तुम लोग भी मेरे कुण्ड में स्नान करो । गोपियाँ बोलीं कि इस कुण्ड में तो तुमने अपना पाप धोया है अतः हम तुम्हारे पाप धोये हुए कुण्ड में स्नान नहीं करेंगी । इसके बाद ब्रजदेवियों ने श्रीजी से कहा कि आप एक कुण्ड बनाओ जो श्यामसुंदर के कुण्ड से कई गुना अच्छा हो तब श्रीजी ने अपने कंकण से खोदकर राधा कुण्ड बनाया । अब तो श्यामसुंदर का चेहरा उतर गया और वह श्रीजी से बोले कि यदि आप मेरे कुण्ड में स्नान नहीं करोगी तो फिर इस कुण्ड में कोई नहीं नहायेगा । तब श्रीजी ने कहा कि तुम घबराओ नहीं, हम लोग तुम्हारा भी सम्मान करेंगी, ऐसा कहकर श्रीजी ने राधाकुण्ड और श्यामकुण्ड के बीच की दीवार को फोड़ दिया और दोनों कुण्डों को मिला दिया तथा यह कहा कि जो राधाकुण्ड में स्नान करेगा, उसे कृष्णप्रेम मिलेगा । इस प्रकार श्यामसुंदर ने ब्रज में जो जलतत्त्व का शोधन किया, उससे हजार गुना अधिक जलतत्त्व का शोधन श्रीजी ने राधाकुंड बनाकर किया । इसीलिए राधाकुंड की बहुत अधिक महिमा है ।

परमाराध्य 'ब्रज का विशुद्ध प्रेम'

बाबाश्री के सत्संग (१/८/२००३) से संकलित

शुद्ध प्रेम क्या है ? शुद्ध प्रेम का जो स्वरूप रसिकों, महापुरुषों तथा शास्त्रों के द्वारा बताया गया है कि जिसमें कोई कामना का गन्दापन न हो, कोई वासना की धुंधलाहट न हो, वही शुद्ध प्रेम है । इस प्रेम के सन्दर्भ में श्रीनारदजी ने कहा है –

"यथा ब्रजगोपिकानाम् ।" (नारदभक्तिसूत्र)

सम्पूर्ण ब्रह्मांड में प्रेम तो केवल गोपियों ने ही किया; जिस प्रेम में किञ्चत्मात्र भी निजसुखइच्छा (निजीवासना) नहीं थी । स्वयं विचारकर देखो कि भगवान् श्रीकृष्ण ने लगभग १०० वर्ष तक द्वारिका में निवास किया लेकिन एकमात्र ब्रजलीला ही समस्त संसार में पूजनीय (आराधनीय) हुई, गायी गई । कहाँ तो १० वर्ष (भगवान् ने ब्रज में १० वर्ष तक निवास किया है) तथा कहाँ (द्वारिका के) १०० वर्ष । ब्रजवास की अवधि (१० वर्ष) से ११ गुना अधिक द्वारिका में भगवान् ने निवास किया परन्तु प्रेम के कारण ही ब्रज का थोड़ा-सा समय ही समस्त संसार का उपासनीय बन गया । भगवान् श्रीरामचन्द्रजी १३ हजार वर्षों तक धराधाम पर रहे परन्तु उनके १४ वर्ष के वनवास की लीला ही ज्यादातर गायी गई । इसका कारण श्रीमद्भागवतजी में लिखा है –

स्मरतां हृदि विन्यस्य विद्धं दण्डककण्टकैः ।
स्वपादपल्लवं राम आत्मज्योतिरगात् ततः ॥

(श्रीमद्भागवतजी ९/११/१९)

भगवान् जो १४ वर्ष तक वनों में घूमे, उसी लीला का अधिकांश गायन किया गया तथा उसी समय के श्रीचरण भक्तों के हृदय में विराजमान हुए । उसका कारण यह था कि १४ वर्ष के वनवासकाल में दंडकारण्य के जंगलों में घूमते समय उनके युगलचरणों में काँटे चुभ गये थे, उस समय जो उन्होंने मर्यादा, पितृ आज्ञा, प्रेम, त्याग और तपस्या का आदर्श रखा, वह चिरस्मरणीय हो गया । कहाँ राजभवन में १३ हजार वर्ष का निवास तथा कहाँ १४ वर्ष का वनवास । सच्चा जीवन वही है जिस जीवन में चमक (हृदय में भक्ति की ज्योति) होती है, नहीं तो हजारों वर्षों तक भक्तिहीन जीवन जीने से कोई लाभ नहीं है । भगवान् १०-११ वर्ष तक ब्रज में रहे तथा लगभग ११० वर्ष द्वारिका में रहे लेकिन ब्रज में जो शुद्ध प्रेममयी लीला थी, उस माधुर्यमयी लीला के समक्ष सम्पूर्ण द्वारिका का वैभव फीका पड़ गया तथा उस शुद्ध प्रेम की चमक केवल कृष्णलीला में ही नहीं अपितु अन्य सभी भगवदावतारों में भी छा गई । भगवान् श्रीकृष्ण ने विशुद्ध प्रेम का एक ऐसा आदर्श रखा जो कि सृष्टिकाल से आज तक कभी भी नहीं रखा गया था । भगवान् श्रीकृष्ण ने दाम्पत्य जीवन द्वारिका में व्यतीत किया, जहाँ सभी कृष्ण-विवाहित १६ हजार १०८ रानियों के अलग-अलग महल, सभी के १०-१० पुत्र, सुख-सुविधायें लेकिन वह सम्पूर्ण वैभव ब्रज में गोपियों के विशुद्ध प्रेम (निष्काम प्रेम, समर्था रति, तत्सुखसुखित्व भाव) के समक्ष फीका पड़ गया । ब्रज के वन, कुञ्जों एवं निकुंजों में

कोई सुख-सुविधायें नहीं थीं, भगवान् श्रीकृष्ण ने साधारण वन्यवेश धारण करके विहार किया । इस बात को प्रमाणित करने के लिए मथुरावासिनी स्त्रियों का पारस्परिक संवाद 'श्रीमद्भागवतजी' में वर्णित है –

पुण्या बत ब्रजभुवो यदयं नृलिङ्गगूढः पुराणपुरुषो वनचित्रमाल्यः ।

गाः पालयन् सहबलः क्वणयंश्च वेणुं विक्रीडयाञ्चति गिरित्ररमार्चिताङ्घ्रिः ॥ (श्रीमद्भागवतजी १०/४४/१३)

सम्पूर्ण धामों, तीर्थों में धन्य तो ब्रजभूमि (ब्रजधाम) ही है । जिस सर्वश्रेष्ठ ब्रजधाम की कुञ्जों में, वनों में, उपवनों में, लताओं में पुराणपुरुष भगवान् श्रीकृष्ण वन्य पुष्पों की माला पहनकर विचरण किया करते हैं तथा वेणु का सुमधुर निनाद करते हैं । यहाँ जो सुन्दर सुमधुर माधुर्यमयी वनलीला हुई है; इसी कारण यह ब्रजधरा सभी धामों (द्वारिका, अयोध्या, जगन्नाथपुरी, काशी आदि) से, सम्पूर्ण पुण्यस्थलों (प्रयागराज आदि) से अत्यधिक अविस्मरमणीय हो गई । जिस प्रकार भक्तजन 'भगवान् श्रीरामचन्द्रजी' की १३ हजार वर्षों की लीलाओं का गायन-स्मरण अधिकांश रूप में न करके अपितु वनवासकाल की लीलाओं का गायन-स्मरण करते हैं क्योंकि उस १४ वर्ष के जीवन में मर्यादा व कर्त्तव्यनिष्ठा की चमक है; उसी तरह से श्रीकृष्ण की १०-११ वर्षों की माधुर्यमयी ब्रजलीलाओं के सामने द्वारिका की ११० वर्षों की वैभवपूर्ण लीलाएँ फीकी पड़ गयीं क्योंकि यहाँ (ब्रज में) जो प्रेम की चमक थी; वह अन्यत्र कहीं भी नहीं थी । एकमात्र केवल गोपीजनों की ही बात नहीं है बल्कि नंद, यशोदा, ग्वालबाल सभी का जो शुद्ध एवं निष्काम प्रेम था, उसकी कोई तुलना नहीं है । जब उद्धवजी मथुरा (मधुपुरी) से ब्रज पहुँचे तब यशोदाजी उद्धवजी से कह रही हैं – "हमारा लाला कन्हैया कहीं भी रहे लेकिन कुशल से रहे और करोड़ो वर्षों तक जिए ।" ऐसा प्रेम कहाँ है ? ब्रज का वात्सल्य, सख्य सभी बेजोड़ (अतुलनीय) है फिर श्रृंगाररस की उपासिका ब्रजगोपियों की तो बात ही क्या है ? –

कहियो यशुमति की आसीस ।
जहाँ रहो मेरो नंद लाड़िलो, जीवो कोटि बरीस ॥
मुरली दई दोहनी घृत भरि, ऊधो धरि लई सीस ।
इह घृत तौ उनही सुरभिन को, जो प्यारी जगदीस ॥
ऊधौ चलत सखा मिलि आए, ग्वाल बाल दस बीस ।
अबके इहाँ ब्रज फेरि बसावो, 'सूरदास' के ईस ॥

यशोदा मैया उद्धवजी से कहती हैं कि लाला से मेरा आशीर्वाद कह देना । "जहाँ रहो मेरो नंद लाड़िलो" यहाँ यशोदा मैया वसुदेव या देवकी का लाल नहीं कहती हैं । वह जो यशोदा मैया का नन्दलाल के प्रति प्रेम है; वह अमर है, उनकी ममता श्रीकृष्ण के प्रति अमर है । यशोदा मैया कहती हैं – "भले ही मैं अपने लाला कन्हैया का मुँह नहीं देख पाऊँ लेकिन वह जहाँ भी रहे; करोड़ों वर्षों तक जीता रहे ।" यह सर्वोच्च कोटि की निष्कामता है; ये सब शुद्ध प्रेम के ज्वलंत उदाहरण हैं । ब्रज से मथुरा प्रस्थान करते समय उद्धवजी को यशोदा मैया ने माखन की एक सदलोनी लाकर दी - **"ऊधो धरि लई सीस"** अब ये पहले वाले उद्धव नहीं रहे, इस माखन की कीमत जान गये कि यह माखन नहीं अपितु कुछ और ही है (माखन के रूप में साक्षात् श्रीकृष्णप्रेम है) । यशोदा मैया ने उद्धवजी से यह नहीं कहा कि यह मेरे हाथ का चलाया हुआ माखन है बल्कि इससे भी आगे की बात कह गईं क्योंकि जिसके हृदय में मातृत्त्व भाव भरा होता है, वही माता की ममता को समझ सकता है । जिसका हृदय मातृत्त्वविहीन है तो वह उस बात को नहीं समझ सकता । यशोदा मैया जानती हैं कि केवल मेरा ही मातृत्त्व नहीं है, यह जो गौमाता खड़ी है वह भी तो कृष्ण- विरह में रुदन कर रही है तथा दूध भी तो इसी का ही है, मैंने तो दधि-मंथन ही किया है; इसलिए यशोदा मैया स्वकृतकार्य नहीं कहती हैं । वह तो उद्धवजी से कहतीं हैं कि कन्हैया से केवल इतना ही कहना कि यह उस गौमाता (सुरभि) के दुग्ध का माखन है; जिसकी तू सेवा करता था । जो आज भी आँगन में खड़ी मुझसे ज्यादा दुःखित हो रुदन कर रही है –

"इह घृत तौ उनही सुरभिन को, जो प्यारी जगदीस ।" यह दृश्य ग्वालबाल देख रहे थे । ग्वालबालों की वाणी से प्रतीत होता है कि वे सकाम हैं परन्तु वे भी परम निष्काम थे, उन्होंने जो कुछ कहा वह यशोदा मैया की विरहावस्था को ध्यान में रखते हुए कहा –

"ऊधौ चलत सखा जुड़ि आए, ग्वालबाल दस बीस ।"

यह जो १०-२० ग्वालबालों की संख्या दी गयी; वह छन्द की दृष्टि से है, वस्तुतः वहाँ सभी ग्वालबाल आ गये थे और उन्होंने यशोदा मैया की यह स्थिति देखी तो उद्धवजी से कहा –

"अबकी बार ब्रज फेरि बसावो, 'सूरदास' के ईस ।"

यह जो मैंने इस पद का भावार्थ किया; यह मैंने नहीं अपितु ब्रजगोपीजनों ने भी श्रीमद्भागवत में यही भाव व्यक्त किया है । भ्रमरगीत के एक श्लोक (श्रीमद्भागवतजी-१०/४७/२१) में श्रीजी उद्धवजी से पूछती हैं कि "अरे मधुकर ! क्या श्यामसुन्दर अपनी मैया-बाबा और सखाओं की याद करते हैं या नहीं ?" ये राधारानी की कितनी सहानुभूति और उदारता है । सखाओं के लिए भी उनके मन में कितनी उदारता है; क्योंकि जो सच्चा प्रेमी होता है; वह अपने दुःख से ज्यादा दूसरे के दुःख को समझता है, यही ब्रज का विशुद्ध प्रेम है, जहाँ प्रेमास्पद की प्रसन्नता ही अपना सुख है ।

असीम करुणामय 'अवतरितधाम'

श्रीबाबामहाराज के सत्संग (५/१/२००४) से संग्रहीत

श्रीभगवान् की लीला-भूमियों में कोई भी जीव यदि देह-त्याग करता है तो उसका भव-बंधन अवश्य छूट जाता है – **चार खानि जग जीव अपारा । अवध तजें तनु नहिं संसारा ॥** (श्रीरामचरितमानस, बालकाण्ड – ३५)

जो उपासक है, वह अवध और ब्रजभूमि की महिमा को मान लेता है क्योंकि यह मार्ग ही श्रद्धा और विश्वास का है । रवींद्रनाथ टैगोर ने कहा था - We walk by faith, not by eyes. हम विश्वास के द्वारा चलते हैं, आँखों के द्वारा नहीं । कई जगह यह बात कही गई है – "**जा मज्जन ते बिनहिं प्रयासा । मम समीप नर पावहिं बासा ॥** " इस धाम में जो निष्ठा से रहते है वे भगवान् के प्यारे बन जाते हैं । "**अति प्रिय मोहि इहाँ के बासी । मम धामदा पुरी सुखरासी ॥**"

(श्रीरामचरितमानस, उत्तरकाण्ड – ४)

सभी शास्त्रों में स्थान-स्थान पर यही बात कही गयी है कि धाम के निवास मात्र से भगवान् प्रसन्न होते हैं । मथुरा-माहात्म्य में कहा गया है कि मथुरा के निवास मात्र से यहाँ रहने वाले पार्षद रूप हो जाते हैं, चतुर्भुज हो जाते हैं । इन्हीं कारणों से नित्य धाम का अवतार यहीं होता है । यह एक व्यवस्था है – जैसे स्टेशन पर जाकर आप रेलगाड़ी में बैठोगे तो गन्तव्य स्थान पर पहुँच जाओगे और यदि आप कहीं दूसरी जगह रास्ते में रेलवे की पटरी पर खड़े होगे तो नहीं पहुँच पाओगे । अब जैसे - कोई कहे कि हम राम ही राम क्यों जपें, हम तो 'गधा-गधा' जपेंगे, तब इसका क्या उत्तर दिया जायेगा ? ऐसे लोगों से कह देना चाहिए कि तुम खूब 'गधा-गधा' जपो, हमारा क्या नुक्सान है । हम तो 'राम-राम' जपेंगे, हम तो 'गधा-गधा' नहीं जपेंगे । ऐसे फिजूल के तर्कों का कोई समाधान नहीं है । भगवान् की कृपाशक्ति से धाम की अचिन्त्य महिमा है । पद्मपुराण के भागवत माहात्म्य में नारद जी ने कहा – **धन्यं वृन्दावनं तेनभक्तिर्नृत्यति यत्र च ।** (भागवतमाहात्म्य १/६१) 'भक्ति' वृन्दावन में नृत्य करती रहती है, यहाँ के निवास से सहज में भक्ति प्राप्त हो जाती है । अब कोई कहे कि भक्ति यहाँ कहाँ नृत्य कर रही है, दिखाई तो नहीं पड़ रही है, कोई घुंघरू की ध्वनि तो सुनाई नहीं पड़ रही है । भक्ति के यहाँ नृत्य करने का मतलब यह नहीं है कि वृन्दावन सिनेमाघर बन गया है । इसका यह अभिप्राय है कि ब्रज-वृन्दावन धाम में भक्ति की सहज उपलब्धि है । इन चीजों को तर्क से नहीं समझा जा सकता । अस्तु, जब तपस्या करने के बाद ब्रह्माजी को भगवान् ने सबसे पहले अपना लोक अर्थात् धाम दिखाया । धाम के दर्शन के बाद तब अपना दर्शन कराया, रूप का दर्शन कराया । 'धाम' का अर्थ है - मकान या जगह और 'धामी' का अर्थ है -घर वाला । नामी का अर्थ होता है - नाम वाला ।

तस्मै स्वलोकं भगवान् सभाजितः संदर्शयामास परं न यत्परम् । व्यपेतसंक्लेश विमोहसाध्वसं स्वदृष्टवद्भिर्विबुधैरभिष्टुतम् । (श्रीभागवतजी २/९/९)

सबसे पहले भगवान् ने ब्रह्माजी को अपना धाम दिखाया, जिस धाम से आगे कोई और वस्तु नहीं है, धाम से आगे कोई और लोक नहीं है । जिस धाम में संक्लेश नहीं है, मोह नहीं है, किसी प्रकार का भय अथवा घबराहट नहीं है । जहाँ दिव्य पार्षद हैं, 'विबुध' अर्थात् देव, स्वर्ग के देवता नहीं । भगवान् के पार्षद जिन्होने भगवान् को देखा है, वे वहां भगवान् की स्तुति करते रहते हैं, भगवद्गुण गाते हैं । उस धाम में कोई अन्य वार्ता (कुकथा) नहीं है, जैसे यहाँ होती है कि आज क्या हुआ, आज ये हो गया, वो हो गया, दुनिया भर की बातें वहाँ नहीं होती हैं । यहाँ पृथ्वी पर धाम का अवतार होने से उसका पृथ्वी से सम्बन्ध है, दिखाई पड़ रहा है कि यहाँ धाम पृथ्वी पर है अतः यहाँ अन्य बातें भी हो जाती हैं लेकिन नित्य धाम में ऐसी बातें नहीं होती हैं क्योंकि वहाँ आसपास माया का कोई क्षेत्र नहीं है । वहाँ केवल भगवान् की स्तुति, भगवान् का गुणानुवाद ही गाया जाता है और कोई दूसरा व्यापार वहाँ नहीं है ।

प्रश्न : क्या यह धाम (पृथ्वी पर स्थित) माया से ग्रसित है ?

उत्तर : 'धाम' माया-राज्य में अवतरित है, ग्रसित नहीं है । जैसे कमल पानी में रहते हुए भी उससे अलग रहता है ।

ब्रज-वृन्दावन के बारे में जैसा कि रसिकों ने कहा है – **फणि पर रवि तर, नहिं विराट महँ, नहि संध्या नहिं प्रात ।**

दिखाई पड़ता है कि यहाँ शाम हुई, सवेरा हुआ लेकिन वस्तुतः यहाँ काल का, सुबह-शाम का बंधन नहीं है । यह धाम भगवान् के विराट स्वरुप में स्थित नहीं है, फिर और क्या कहा जाय ? यह धाम शेषनाग के फन पर नहीं है जबकि ऐसा दिखाई पड़ता है । इसलिए रसिकों ने लिखा है - **प्रगट जगत में जगमगै वृंदा विपिन अनूप ।**

नयन अछत दीखै नहीं यह माया को रूप ॥

(बयालीसलीलाकार श्रीध्रुवदासजी)

बहुत सी चीजें ऐसी हैं, जो दिखाई नहीं पड़ती, क्या आपको अपनी आत्मा दिखाई पड़ती है । सबके पास आत्मा है लेकिन हमको दिखाई नहीं पड़ सकती । एक छोटा-सा स्थूल पिण्ड (शरीर) दिखाई पड़ता है, यह भी पूरा दिखाई नहीं पड़ता । इसके भीतर रोगों की जाँच करने के लिए एक्सरे, अल्ट्रा साउंड आदि द्वारा परीक्षण करने पड़ते हैं क्योंकि शरीर के भीतर सूक्ष्म तत्वों तक मनुष्य की दृष्टि नहीं पहुँच सकती । मनुष्य तो अँधा है । हजारों सूक्ष्म चीजें हैं । क्या आप अपना मन देख सकते हैं ? बुद्धि देख सकते हैं ? अहंकार देख सकते हैं ? इन्द्रिय देख सकते हैं ? संस्कार देख सकते हैं ? कर्म देख सकते हैं ? हजारों ऐसी चीजें हैं जो हम नहीं देख सकते । भागवत में वर्णन आया है कि हमारे शरीर में चित्त है, यह कैसे पता पड़ेगा तो कहा गया कि इन्द्रियों की चेष्टा से चित्त का अनुमान लगाया जा सकता है - **यथानुमीयते चित्तमुभयैरिन्द्रियेहितैः ।**

एवं प्राग्देहजं कर्म लक्ष्यते चित्तवृत्तिभिः ॥

(भागवत ४/२९/६३)

जैसे कोई गाड़ी जा रही है तो आप कहेंगे कि इसे चलाने वाला कोई चालक होगा तभी तो चल रही है, बिना चालक के गाड़ी कैसे चलेगी ? यदि रिमोट कन्ट्रोलर से भी चलाओगे तब भी कोई चलाने वाला तो होगा ही, जैसे बहुत-सी चीजें रिमोट कंट्रोलर से चलती हैं, दूर से बटन दबा दिया जाता है और वस्तु चलने लगती है किन्तु इन्हें चलाने वाला कोई मनुष्य होता है । अन्तरिक्ष में रॉकेट छोड़ा जाता है तो नीचे रिमोट कंट्रोलर के द्वारा इस पर नियंत्रण रखा जाता है, उसे चलाया जाता है । बिना चलाने वाले के कोई चीज नहीं चलती है । इसी प्रकार भागवत के उपरोक्त श्लोक में कहा गया कि जीव की ज्ञानेन्द्रियाँ और कर्मेन्द्रियाँ कर्म करती हैं तो इनका कोई चालक (ड्राइवर) अवश्य होगा, वह कौन है, वह चित्त है । यह सिद्धान्त थोड़ा कठिन विषय है लेकिन बहुत बढ़िया ढंग से इसमें समझाया गया है । हम लोग पूर्व जन्म में भी थे, यह कैसे पता पड़े, यह चित्त की वृत्तियों से पता चलता है क्योंकि सबकी चित्त-वृत्तियाँ अलग-अलग प्रकार की होती हैं । देखने में आता है कि एक लड़का जन्म से ही क्रोधी है, हर समय क्रोध करता, लड़ता-फनफनाता है, इसका कारण यह है कि वह पूर्व जन्म की किसी तामसी योनि से आया है । जैसे - सांप, बिच्छू, कांतर, गुहेरा (विषखोपड़ा) आदि परम क्रोधी तामसी योनियाँ हैं । कोई लड़का स्वभाव से ही शांत होता है, इसलिए जैसे चित्त की वृत्तियाँ अलग-अलग होती हैं,

उनसे पता पड़ता है कि पिछले कर्मों के अनुसार चित्त काम कर रहा है । चित्त काम कर रहा है, इसका प्रमाण क्या है तो इसका उत्तर यह है कि ज्ञानेन्द्रियाँ, कर्मेन्द्रियाँ चल रही हैं, तो इनको कोई चला रहा है, अब वह चलाने वाला दिखाई नहीं पड़ता, यह दूसरी बात है । अब तुम कहो कि अरे ! बुद्धि दिखाई नहीं पड़ती इसलिए हम बुद्धि को नहीं मानते तो तुम मत मानो, तुम्हारे न मानने से क्या होता है ? तुम जो कहते हो कि हम नहीं मानेंगे तो तुम्हारी खोपड़ी ही इसका प्रमाण है, तुम्हारी स्वयं की बुद्धि ऐसी है कि हम नहीं मानेंगे, यही बुद्धि के अस्तित्व का प्रमाण है । बहुत-सी चीजें दिखाई नहीं पड़ती हैं । अनंत कर्म हैं । केवल छोटा-सा यह स्थूल शरीर हमें दिखाई पड़ता है और वह भी पूरा नहीं दिखाई पड़ता है । अब हमारे शरीर के पीछे क्या हो रहा है, इसका हमें पता नहीं पड़ता । इसलिए मनुष्य तो इतना अंधा है । इसी तरह पृथ्वी पर स्थापित धाम और नित्य धाम एक ही है लेकिन दिखाई नहीं पड़ता है, क्योंकि हमारी आँखों में माया का पर्दा पड़ा हुआ है, हमारा अन्तःकरण मायिक विकारों के कारण गन्दा हो गया है । (जब सिद्धांत बहुत हो जाता है तब थोड़ी रस की बात भी जरूरी पड़ती है क्योंकि ज्यादा सिद्धांत की चर्चा से लोग ऊब जाते हैं, इसलिए सिद्धांत के साथ मन न ऊबे क्योंकि रस ही मुख्य वस्तु है) नित्य धाम और पृथ्वी पर दिखाई पड़ने वाला ब्रज अथवा अवध धाम एक ही है किन्तु इसे हम समझ नहीं सकते, इसलिए नहीं समझ सकते क्योंकि हमारी बुद्धि देश, काल से परिच्छिन्न है । परिच्छिन्न माने दो चीज हैं बाँटने वाली, एक तो देश जैसे यदि आप घर में बैठे हैं तो बरसाना में नहीं हैं, यह देश की परिच्छिन्नता है । काल की परिच्छिन्नता यह है कि आप सन् २०१८ में बैठे हैं तो इसका अभिप्राय है कि आप सन् १८५७ में नहीं थे अर्थात् यह वर्तमान आपका शरीर उस वर्ष में नहीं था । यह काल की परिच्छिन्नता है, उसे तो केवल इतिहास में पढ़ते रहो । इसलिए देश और काल की परिच्छिन्नता के कारण हमारी बुद्धि उस वस्तु को नहीं समझ सकती जो देश और काल से अपरिच्छिन्न है । भगवान् के आँख, कान, हाथ-पैर आदि सर्वत्र हैं, इस बात को हम कैसे समझ सकते हैं ? इसीलिए पृथ्वी पर स्थापित यह ब्रज और अवध धाम वही है जो नित्य धाम है, यह हमारी बुद्धि में समझ में नहीं आता है क्योंकि हमारी बुद्धि देश और काल से परिच्छिन्न है लेकिन रसिक संत-महापुरुष कहते हैं कि इस धाम में इस तरह रहो, यह वही धाम है, यहाँ पर श्रीराधारानी की लीलाकाल की वही दिव्य कुंजें हैं । **"यही है यही है भूलि भरमो न कोउ ॥** " ये है रसिकों की वाणी अर्थात् इतनी देर से जो समझाने का प्रयास किया गया, उससे अच्छा है कि सीधे-सीधे यह मान लो कि यह वही चिन्मय धाम है तो इतने परिश्रम की जरूरत नहीं पड़ेगी । यह वही वस्तु है । यह श्री भट्टदेवाचार्य जी की वाणी है, वह कहते हैं कि भ्रम मत करो । यहाँ धाम में वही श्रीराधारानी की दिव्य कुंजें हैं, आज भी वह यहाँ खेल रही हैं, ऐसा विश्वास करके यहाँ रहो ।

गौ–सेवकों की जिज्ञासा पर माताजी गौशाला का

Account number दिया जा रहा है –

SHRI MATAJI GAUSHALA,

GAHVARVAN,BARSANA, MATHURA

Bank – Axis Bank Ltd

A/C – 915010000494364

IFSC – UTIB0001058 BRANCH – KOSI KALAN,

MOB. NO. – 9927916699

इष्ट-प्रेम की पहिचान 'श्रीधाम में प्रगाढ़ प्रीति'

श्रीबाबामहाराज के सत्संग (५/१/२००४) से संग्रहीत

अवतरितधाम का भौतिक रूप जो हमें दिखाई दे रहा है, ये वही चिन्मय नित्य धाम है; ऐसा विश्वास नहीं करोगे तो फिर यहाँ से टिकट कट जायेगा अर्थात् धाम के प्रति दिव्य भाव न रहकर प्राकृत (भौतिक) भाव आने लगेंगे और सोचने लगोगे कि अमुक स्थान से भण्डारे का निमन्त्रण आया है, वहाँ चलें, वहाँ पाँच सौ रुपये दक्षिणा में मिलेंगे अथवा अमुक अन्य स्थान पर यज्ञ हो रहा है, वहाँ एक हजार रूपये दक्षिणा मिलेगी, चलो वहाँ चलें, यहाँ **धाम** में तो फिर कभी आ जायेंगे । लेकिन जब धाम में सुदृढ़ आस्था हो जाएगी कि यही हैं राधारानी की दिव्य कुंजें, जिनमें नित्य विहार लीला होती है; तो फिर यहाँ से धाम के बाहर अन्यत्र कहीं नहीं जाओगे, हजार रुपये का लोभ तो बहुत छोटी चीज है, यहाँ तक कि बहुमूल्यवान् वस्तुयें हीरे, मोती-मणियाँ आदि भी फीके लगने लगते हैं, जो मन को आकर्षित नहीं कर सकते हैं । रसिक संतजन कहते हैं –

रे मन वृंदाविपिन निहार ॥ यद्यपि मिले कोटि चिंतामणि, तदपि न हाथ पसार ॥ (श्रीभट्टजी)

करोड़ों चिंतामणि भी मिले तब भी ब्रज के बाहर मत जाओ । हम जैसे लोग तो तुच्छ पाँच सौ रुपये देखकर मर जाते हैं । इसीलिए महापुरुषों ने गाया है – "**यही है, यही है भूलि भरमो न कोऊ भूलि भरमे ते भव भटक मरिहौ ॥** " अगर धोखे में भी भ्रम आ गया कि नहीं ये धाम तो ऐसे ही साधारण-सी जगह है, यहाँ तो बड़े-बड़े गुंडे रहते हैं और इस कारण अगर तुम्हारी आस्था हट गयी तो तुम्हें नुक्सान उठाना पड़ेगा । यही इसी धाम में श्रीराधामाधव का नित्य विहार होता है व अवतरित होकर के विशेष रूप से रसमयी लीलाएँ करते हैं ।"**लाड़िली लाल के नित्य सुखसार बिन, कौन विधि वार ते पार परिहौ ॥** " यह विश्वास महात्माओं ने दिलाया की अरे जीव ! ऐसा विश्वास नहीं करोगे तो भवसागर से पार कैसे जाओगे? कुछ लोग कहते हैं कि हम रहते तो धाम में हैं, कभी-कभी धाम के बाहर चले जाते हैं परन्तु महापुरुषों ने कहा है – "नहीं, यहाँ अनन्य बनकर रहो ।" ये नहीं कि आज कहीं और का टिकट कटा लिया, यदि कहीं भंडारा नहीं तो मधुकरी माँगकर के खा लिया और अगर दूसरे दिन पंगत का निमन्त्रण आ गया कि वहाँ दूध-मलाई बनी है तो सोचने लगे कि छोड़ो मधुकरी, मधुकरी में क्या रखा है? ऐसा नहीं करना चाहिए । **"एक अनन्य की टेक उर में धरौ, परिहरौ भर्म ज्यौ फूल फरिहौ ॥** " किसी चीज का सेवन करो तो अनन्य भाव से, फिर वह सुदुर्लभ गुह्यतम प्रेममयी भक्ति तुमको मिलेगी । अनन्य नहीं बनोगे तो फिर भटकते रहोगे, किसी ने कुछ कह दिया कि ये कर, वो कर, यहाँ चल, वहाँ चल, यहाँ धाम में क्या रखा है, तो फिर संसार में भटकते रहोगे । एक धाम के प्रति अनन्य नहीं बनोगे तो जैसे गेंद कभी यहाँ लुढकी, कभी वहाँ लुढकी, यहाँ गयी, वहाँ गयी, ऐसे ही संसार में लुढकते फिरोगे । इसलिए एक अनन्यता की टेक अपने हृदय में धारण करो । नहीं तो **"भूलि भरमे ते भव भटक मरिहौ"** निष्ठा टूट जाएगी । अगर अनन्य निष्ठा के साथ धाम में रहोगे तो बहुत जल्दी वहाँ पहुँच जाओगे, जहाँ राधारानी हैं लेकिन ध्यान रहे कि कहीं यह निष्ठा टूट न जाए । अनन्य नहीं बनोगे तो निष्ठा टूट जाएगी । **श्रीहरिप्रिया के परम पद पास ही, आसु अनिवास ही वास करिहौ ॥** (महावाणी-२९५)

'अनिवास' जो धाम सबसे अलग है, इस पृथ्वी पर आधारित नहीं है, जो प्रत्यक्ष स्थूल दिखाई पड़ते हुए भी अनिवास अर्थात् सबसे अलग है, अनाश्रित है, इसके प्रति निष्ठा ही तुमको श्रीराधामाधव के पास ले जायेगी परन्तु इस निष्ठा को लोग तोड़ देते हैं । यदि कच्चे आदमी के पास बैठोगे तो निष्ठा टूट जाएगी, यह निश्चित बात है । अतः निष्ठावान के पास ही सदा बैठो । इसलिए अनन्य रसिक हरिरामव्यासजी ने कहा –**"जाकी उपासना ताही की वासना, ताही को नाम-रूप-लीला नित्य गाइए । यहै**

अनन्य धर्म परिपाटी, वृन्दावन बस तजि अनत न जाइए । आन कहै आन करै सोई व्यभिचारी, वाको मुख देखे दारुन दुख पाइए ॥ " व्यभिचारी का संग करोगे तो तुम्हारे जीवन में भी व्यभिचार आ जाएगा, वह कहेगा कि अरे, अमुक स्थान पर भव्य यज्ञ हो रहा है, पाँच सौ रुपये दक्षिणा मिलेगी, शाल-दुशाला भी मिलेगी और कोई-कोई तो कहेगा कि वहाँ एक हजार रुपये दक्षिणा मिलेगी । "**व्यास होत उपहास आस किये, आस अछत कत दास कहाइये ॥** " जब तुम्हारी आशा इधर-उधर है कि यहाँ ये मिलेगा, वहाँ वो मिलेगा तो तुम दास कहाँ रहे । तुम्हारी तो कुत्ता वाली वृत्ति हो गयी, यहाँ जाओ, वहाँ जाओ । यहाँ आओ, यहाँ टुकड़ा मिलेगा, वहाँ जाओ, वहाँ टुकड़ा मिलेगा, ऐसा होता ही है । श्रीबाबामहाराज कहते हैं कि एकबार एक संत मेरे पास आकर बोले –"महाराज ! अमुक आश्रम में बहुत अच्छी संत-सेवा होती है ।" मैंने पूछा – "क्यों ?" तो वह बोले कि वहाँ भोजन में प्रतिदिन दो प्रकार की दाल, दो प्रकार की चटनी, दो तरह के साग, चावल, रोटी आदि खाने को मिलते हैं । इसके अलावा खाने के बाद बर्तन वैसे ही छोड़ दो, बर्तन भी दूसरे लोग साफ करते हैं । यह सुनकर मैंने सोचा कि यह सेवा है कि भोजन का आराम है । सेवा तो यह होती कि अमुक आश्रम में अति उत्तम नाम-संकीर्तन होता है, सत्संग होता है । सच्ची सेवा दो दाल, दो चटनी, दो प्रकार के साग नहीं है । सच्ची सेवा तो यह है कि अमुक आश्रम में बहुत अच्छी भगवत्कथा होती है, बहुत बढ़िया भगवन्नाम-कीर्तन होता है, सत्संग होता है । परन्तु हम जैसे लोग तो इसी चीज में घुस रहे हैं कि वहाँ दो दाल, दो चटनी, साग, मिठाई और दूध मिलता है, यह सेवा नहीं है, यह व्यभिचार है । इस व्यभिचार का वर्णन भगवान् ने गीता में भी किया है – **मां च योऽव्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते । स गुणान्समतीत्यैतान्ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥**

(श्रीगीताजी १४/२६)

अव्यभिचार भक्तियोग से तुम भगवत्स्वरूप हो जाओगे । भक्ति में व्यभिचार नहीं होना चाहिए । वृन्दावनमहिमामृत शतक के रचियता प्रबोधानन्दजी ने अपने ग्रन्थ में यहाँ तक लिखा है कि यदि कोई मुझसे कहेगा कि ब्रज-वृन्दावन के बाहर चलो तो मैं उसकी जीभ को ही काट लूँगा और यदि कोई मुझे जबरदस्ती ब्रज के बाहर ले जाने का प्रयास करेगा तो मैं उसका सिर काट दूँगा । पदों में महापुरुषों ने गाया है – **वृन्दावन के वृक्ष हमारे मात-पिता सुत बन्धु ।**
गुरु पितु मातु बन्धु सत्संगति फल-फूलन को गंध ।
इनहि पीठ दै अनत दीठि करि सो अन्धन में अंध ॥

व्यासजी महाराज कहते हैं कि जो इन ब्रज के वृक्षों को छोड़कर दूसरी ओर दृष्टि करता है, दूसरी ओर देखता है, वह अंधा है, उसमें अनन्यता नहीं है, चाहे वह कितना भी पढ़ा-लिखा विद्वान है और जो भी जबरदस्ती ब्रज को छुड़ाये तो उसका राम-नाम सत्य कर देना चाहिए – **"व्यास इनहि छोड़े जो छुड़ाये, ताको परियो कंध ॥** " उसको कंधा दे देना अर्थात् उसका राम-नाम सत्य कर देना (जो धाम को छोड़े या छुड़वाए तो उसकी उपेक्षा कर देनी चाहिए, यहाँ तक कि उसकी हिंसा कर देने में भी अपराध नहीं लगेगा ।) यह है धाम के प्रति अनन्यता । पतंजलि भगवान् ने कहा है – '**योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः**' - चित्तवृत्तियाँ तुम्हारी कहाँ हैं, ये भी एक अच्छे साधक को विचार करना चाहिए, यदि अच्छा साधक है तो वह इस पर विचार करता है और विचार करना चाहिए कि हमारे अन्तःकरण का प्रवाह किधर है । यदि साधक ऐसा नहीं सोचता है तो विवेक उत्पन्न नहीं होगा । विवेक तो तभी होता है जब चिन्तन होता है कि सत् का ग्रहण हो रहा है और असत् का त्याग हो रहा है । हम जैसे लोगों में श्रद्धा-भाव की कमी है और जिस ढंग से धाम में रहना चाहिए, उस ढंग से हम नहीं रह रहे हैं । हमारा अनुपान गलत है, रहने का ढंग गलत है, इसलिए हमारे हृदय में धाम-धामी के प्रति विशुद्ध भाव-प्रेम का उदय नहीं हो रहा है । इसलिए '**सत्कारासेवितो**' अर्थात् कथनाशय है कि श्रद्धा-विश्वास से सतत् सावधानीपूर्वक साधन करते हुए धाम का सेवन करना चाहिए, जिससे सहज ही धाम के प्रभाव से धामी की संप्राप्ति हो जाती है ।

श्रेष्ठ महापुरुषों की शरण में रहोगे तो नहीं गिरोगे । श्रेष्ठ महापुरुष अर्थात् भक्त, जो नाम संकीर्तनादि में लगे हुए हैं, ऐसे योगेश्वरों की अनुवृत्ति से अशुभों को तुम नष्ट कर दोगे, नहीं तो अशुभ स्वयं तुमको ही नष्ट कर देंगे ।

सतत् साधन से धामवास की सार्थकता

श्रीबाबामहाराज के सत्संग (७/५/ २००६) से संग्रहीत

प्रायः जब लोग सतत् सत्संग रूपी साधन से हट जाते हैं तो बहिर्मुखता बढ़ने के कारण देहाध्यासी होने से अपने ललाट पर तिलक लगाकर शीशे में चेहरा देखते हैं कि जँचा प्रायः जब लोग सतत् सत्संग रूपी साधन से हट जाते हैं तो बहिर्मुखता बढ़ने के कारण देहाध्यासी होने से अपने ललाट पर तिलक लगाकर शीशे में चेहरा देखते हैं कि जँचा कि नहीं, तिलक में सुन्दरता आयी कि नहीं, भक्ति करने का लक्ष्य बदलकर शरीर-संसार की भक्ति करने लग जाते हैं । पातंजलि-योगसूत्र में लिखा है – "स तु दीर्घकालनैरन्तर्यसत्कारासेवितो दृढभूमिः ।" (पातंजलि-योगसूत्र १/१४) साधन का पहला चरण है – 'दीर्घकाल ।' पातंजलि भगवान् कहते हैं कि सोच-समझ कर पाँव रखो । 'दीर्घकाल' का अर्थ है कि लाख जन्म भी लग जायें तो भी पाँव पीछे नहीं हटाओ । साधन का दूसरा चरण पातंजलि भगवान् ने बताया – 'नैरन्तर्य ।' 'नैरन्तर्य' से सम्बंधित एक उदाहरण श्रीबाबामहाराज अपने जीवन की घटना से बताते हैं कि एक बार मेरे कोई मित्र मुझसे मिलने आये और बोले कि हम संस्कृत पढ़ना चाहते हैं तो मैंने कहा कि प्रेम सरोवर पर 'संस्कृत पाठशाला' है, वहाँ चले जाइये संस्कृत पढ़ने । वह वहाँ दो-चार साल तक पढ़ते रहे । इसके बाद मुझे भी संस्कृत पढ़ने की इच्छा हुई तो मैं भी वहाँ गया और पूर्व मध्यमा व शास्त्री की पढ़ाई किया, संस्कृत की सारी पढ़ाई मैंने पढ़ ली । जब मेरे मित्र मुझे वहाँ मिले तो मैंने पूछा कि आपका क्या हाल है तो वह बोले कि अभी मैं पंचसंधि रट रहा हूँ, अभी तक मुझे वह पूरी याद नहीं हुई । इसे साधन नहीं कहा जाता है । दस साल बीत गये लेकिन दस दिन का कोर्स पूरा नहीं हुआ, पढ़ाई करते-करते ही वह बीच में ब्रज-चौरासी कोस की परिक्रमा करने चले गये, जिसके कारण सब पढ़ाई विस्मृत हो गयी, परिक्रमा से लौटकर उन्होंने फिर याद किया, फिर बाहर कुछ दिनों के लिए किसी पंगत में चले गये, फिर लौट आये फिर थोड़ा-सा रटे, फिर चले गये बड़ी परिक्रमा करने, उसके बाद फिर जोर लगाया; इस तरह उनके बारह-चौदह साल बीते परन्तु 'पंचसन्धि' ही पूरी नहीं हुई, हारमोनियम-ढोलक बजाने का अच्छा अभ्यास था लेकिन श्री बाबा महाराज ने देखा कि अधिकांश साधु कीर्तन में बैठ तो जाते कारण कि पढ़ाई में 'नैरन्तर्य' नहीं था । 'नैरन्तर्य' माने जो साधन चौबीस घंटे चलता रहता है ।

योगी युञ्जीत सततमात्मानं रहसि स्थितः । एकाकी यतचित्तात्मा निराशीरपरिग्रहः ॥ (श्रीगीताजी ६/१०) भगवान् ने भी गीता में कहा कि साधन तो सतत्, दिन-रात चलना चाहिए, उसको साधन कहते हैं । जैसे कि रामायण में कहा गया है – "**जागत सोवत सरन तुम्हारी ।**"

(श्रीरामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड – १३०)

जागते, सोते, सुषुप्ति – तीनों अवस्थाओं में जो चलता रहे, उसको साधन कहते हैं । ये नहीं कि एक घंटा पाठ कर लिया और भजन हो गया हमारा, इसको साधन या भजन नहीं कहते; कई जगह भगवान् ने गीता में इसे कहा है – **महात्मानस्तु मां पार्थ देवीं प्रकृतिमाश्रिताः । भजन्त्यनन्यमनसो ज्ञात्वा भूतादिमव्ययम् ॥ सततं कीर्तयन्तो मां यतन्तश्च दृढव्रताः । नमस्यन्तश्च मां भक्त्या नित्ययुक्ता उपासते ॥** (श्रीगीताजी ९/१३,१४) इन श्लोकों में 'नित्ययुक्ता' और 'सतत्' शब्द भगवान् ने इसीलिए जोर देकर कहे कि साधन उसको नहीं कहते कि एक घंटा, आधा घंटा कर लिया, थोड़ा-सा नेम-टेम कर लिया और सोचने लगे कि हमारा साधन हो गया । हम जैसे नासमझ लोग थोड़ी देर के जप, पाठ–पूजा को ही साधन समझते हैं । वस्तुतः साधन तो वह है, जो जब शुरू हो गया तो फिर बंद नहीं होगा, जागते-सोते, उठते-बैठते, खाते-पीते–हर समय चलता रहता है, उसका नाम साधन है, इसीलिये साधन का दूसरा चरण है – '**नैरन्तर्य** ।' साधन का तीसरा चरण है – '**सत्कारासेवितो** ।' 'सत्कार' का अर्थ है - श्रद्धा । श्रद्धा-रुचि के साथ साधन में लगना चाहिए । श्रीबाबामहाराज शुरू में जब ब्रज में आये तो एक बार वृन्दावन में कलाधारी आश्रम पर गये क्योंकि भोजन पाने की व्यवस्था वृन्दावन में उस समय केवल उसी आश्रम में थी । उस आश्रम का यह नियम था कि या तो २ घंटे रसोई में सेवा करो अथवा २ घंटे कीर्तन करो । अधिकतर लोग वहाँ कीर्तन में बैठते थे क्योंकि उसमें मेहनत नहीं करनी पड़ती है । श्रीबाबामहाराज कीर्तन करने बैठ गये क्योंकि उनको थे परन्तु बीच में कोई बात करने लग जाता, कोई तम्बाकू मलने लगता और जब मंदिर का कोतवाल आ जाता तब सब साधु

उसको दिखाने के लिए जोर-जोर से कीर्तन करने लग जाते थे और जब वह चला जाता तो वे साधु फिर से बात करने लग जाते, इधर-उधर की क्रिया करने लग जाते थे । इसको साधन नहीं कहते हैं क्योंकि उसमें साधन के प्रति सत्कार, श्रद्धा, रुचि नहीं है । करना पड़ रहा है इसलिए मज़बूरी में कर रहे हैं । जैसे - स्कूल में बच्चे प्रतीक्षा करते हैं कि कब छुट्टी का घंटा बजे और जैसे ही घंटा बजता है फिर ऐसे भागते हैं जैसे खूंटे से पशु छूटकर भागा हो । इसी प्रकार भजनाश्रम में भी एक घंटे कीर्तन करने का पैसा दिया जाता है, दो घंटे कीर्तन करने का कुछ अधिक दिया जाता है तो इस तरह के साधन में सत्कार नहीं है । जब सत्कार नहीं है तो उसे पातंजलि भगवान् ने साधन नहीं माना है । यह बड़ी सूक्ष्म बात है । चौथा साधन है - 'दृढ़भूमि'–दृढता अर्थात् द्वन्द्वों का प्रभाव हमारे साधन पर न पड़े । **इच्छाद्वेषसमुत्थेन द्वन्द्वमोहेन भारत । सर्वभूतानि सम्मोहं सर्गे यान्ति परन्तप ॥** (श्रीगीताजी ७/२७) 'द्वंद्व' साधन को नष्ट कर देते हैं, किसी भी प्रकार का द्वन्द यदि चित्त में आ गया, चाहे वह राग सम्बन्धी द्वन्द हो, चाहे द्वेष सम्बन्धी द्वंद्व हो, वह साधन को समाप्त कर देता है । चाहे तुम दिन-रात साधन में लगे रहो । कहीं किसी शरीर में राग हो गया या किसी भी विषय-वस्तु से राग हो गया भोजन आदि अन्य चीजों से तथा किसी से द्वेष हो गया तो इससे नुक्सान ही होता है । विश्वास में कमी होने के कारण लोग कहते हैं कि इतने दिन हो गये इस साधन को करते-करते, अब दूसरे मार्ग (साधन) को पकड़ो । कुछ लोग साधकों को सलाह देते हैं कि अरे ! इतने दिन हो गये तुम्हें कीर्तन करते हुए, कोई फायदा नहीं हुआ, इसलिए अब माला करो । माला कई दिन फेर ली तो किसी ने कहा कि अरे ! इतने दिन माला करने से कोई फायदा नहीं हुआ तो अब पाठ करो । पाठ से कोई लाभ नहीं दिखा तो फिर कहने लगे कि अब दूसरा साधन करो । इस प्रकार दृढता न होने से उसे साधन नहीं माना गया । साधन के चार अंग माने गये हैं । अब ये देखना है कि यदि इस पैमाने पर हम चलते हैं तो ऐसी कौन-सी चीज है, जिसे हम चौबीस घंटे कर सकते हैं, निरन्तर कर सकते हैं, दृढता से कर सकते हैं । धामनिष्ठ लोगों ने बताया कि धाम सबसे सरल है, सबसे सुगम है । ऐसा क्यों? तो इसका उत्तर यह है कि नाम-संकीर्तन बहुत ही सरल-सहज-सरस साधन है किन्तु जब सो जाओगे तो ये रसमय साधन बंद हो जायेगा क्योंकि सोना तो पड़ेगा ही, परन्तु धाम के सम्बन्ध में तो धामनिष्ठ रसिक महापुरुषों ने कहा है – '**वृन्दावन में मंजुल मरिबो ।**' यहाँ की मृत्यु भी मंगल है, यहाँ का सोना भी मंगल है, वह भी भजन है – **काहू के बल भजन को, काहू के आचार । व्यास भरोसे कुँवरि के, सोवत पाँव पसार ॥** ब्रज में मरना भी मंगल है, यहाँ सोना भी मंगल है, यहाँ सब कुछ मंगल है, यदि कोई यहाँ एकनिष्ठ होकर रहे । इसीलिए धामवास को सरल साधन बताया गया है । कुछ नहीं कर सकते तो यहाँ धाम में आकर मर ही जाओ । यहाँ तक महापुरुषों ने कह दिया कि – **रे मन वृन्दाविपिननिहार । विपिनराज सीमा के बाहर, हरि हू को न निहार ॥** (श्रीभट्टजी) ब्रज के बाहर तो भगवान् को भी मत देखना लेकिन धाम सबसे सरल होते हुए भी क्या कारण है कि हम जैसे लोगों को कोई अनुभूति नहीं हो रही है । ये भी तो विचार करना चाहिए, औषधि खा रहे हैं फिर भी रोग बढ़ रहा है, इसका कोई कारण अवश्य होगा; जैसे - किसी ने पूछा कि क्या आपको जुकाम है, उत्तर दिया कि हाँ, जुकाम है । पूछने वाले ने सलाह दी कि सात नीम की पत्ती, सात काली मिर्च, सात तुलसी की पत्ती को लेकर उनको औटा कर पी लो । जुकाम का रोगी बतायी विधि के अनुसार सब पत्तियाँ लाया लेकिन औटाना भूल गया और सुबह के समय पत्तियों को पीसकर ठण्डे पानी के साथ पी गया, इससे अनुपान गलत हो गया, औषधि तो ठीक थी किन्तु उसकी सेवन-विधि गलत थी; वैसे ही धाम में हम रह रहे हैं किन्तु प्रतिक्षण हमारी भावना बढ़ नहीं रही है तो अवश्य ही अनुपान में कोई गड़बड़ी है, इसलिए उसका ठीक फल नहीं मिल रहा है । निरन्तर विचार करना चाहिए कि हमारी चित्तवृत्तियाँ क्या सच्चाई से इष्ट की ओर चल रही हैं या लड्डुआ-पूड़ी, भोग आदि की ओर चल रही हैं अथवा अन्य दोष-दर्शन की ओर चल रही हैं ।

कलियुग का प्रभाव दिनोदिन बढ़ता जा रहा है; ऐसी विकट स्थिति में कृष्ण प्रेम की प्राप्ति कैसे हो सकेगी ? राधामाधव के चरणचिह्नों से चिह्नित इस ब्रजभूमि का आश्रय ले लो । यहाँ की त्रिलोकपावनी रज ही जीवों को कृष्णप्रेम का दान करेगी ।

૩૫

RNI REFERENCE NO. 1313397- REGISTRATION NO. UP BIL-2017/72945-TITLE CODE UP BIL-04953 POSTAL REGD.NO. 093/2021-2023
श्री मान मन्दिर सेवा संस्थान के लिए प्रकाशक/मुद्रक एवं संपादक राधाकांत शास्त्री द्वारा गुप्ता ओफ़्सेट प्रिंटर्स A- 125/1 , wazipur industriyal area, new delhi- 52 से मुद्रित एवं मान मन्दिर सेवा संसथान, गह्वरवन, बरसाना, मथुरा (उ.प्र.) से प्रकाशित [AGRA/WPP-12/2021-2023 AT 22.12.23]